पत्थर की बाँसुरी

(कुँअर बेचैन की नवीनतम ग़ज़लें
ग़ज़ल पर विस्तृत बातचीत सहित)



पत्थर की बाँसुरी

ग़ज़ल-संग्रह

(ग़ज़ल पर बातचीत सहित)

कुँअर बेचैन

अयन प्रकाशन, नई दिल्ली

अयन प्रकाशन
1/20 महरौली, नई दिल्ली 110030

बिक्री कार्यालय
1619/6 बी उल्धनपुर, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण शान्ति स्वरूप

मूल्य चालीस रुपये

प्रथम संस्करण 1990
PATTHAR KI BANSURI (Ghazals) by Kunwar Becham

मुद्रक जानान प्रिंटस, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

समर्पण—

मेरे अग्रज
एव प्रसिद्ध नवगीतकार
श्री देवेन्द्र शर्मा इन्द्र को

तथा

हिन्दी गजल को कथ्य एव शिल्प दोनो ही दृष्टियो से
समृद्धि प्रदान करने वाले गजलकार
श्री बलबीर सिंह रग, दुष्यन्त कुमार, रामावतार त्यागी, रूपनारायण त्रिपाठी, नीरज, बालस्वरूप राही, चन्द्रसेन विराट, सूर्यभानु गुप्त, डॉ॰ उर्मिलेश, माधव मधुकर, अदम गोन्डवी, शिव ओम अम्बर, डॉ॰ शेरजग गर्ग, नरेन्द्र वशिष्ठ, डा॰ गिरिराज शरण अग्रवाल, जहीर कुरशी, राजगोपाल सिंह, कृष्णानन्द चौबे, ज्ञान प्रकाश विवेक, धनजय सिंह, प्रमोद तिवारी, राजकुमारी रश्मि, इन्दुमती कौशिक

एव

हिन्दी गजल पर शोध कार्य करने वाले डा॰ रोहिताश्व अस्थाना तथा श्री महेन्द्र शंकर जैसे अन्य सभी मित्रो को जो हिन्दी गजल के बारे मे कुछ न कुछ लिखते रहते हैं

और

उन सभी हृदयो को भी
जो इन पक्तियो की गहराइयो तक
आना पसन्द करेंगे—

फैलना है तुझे खुशबू-सा अगर दुनिया मे
एक ही फूल की पँखुरी मे सिमट चुपके से

—कुअर बेचैन

अपनी बात

'पत्थर की बाँसुरी' मेरी काव्यांजलि का सातवा पुष्प है। पिछले छ काव्य-संग्रहों को पाठकों, समालोचकों एव श्रोताओं का जो असीम प्यार मिला उसी की प्रेरणा से यह संग्रह आपकी सेवा म दे सका हू। मुझे विश्वास है कि इस संग्रह को भी मेरे सहृदय पाठक अपना वही प्यार देंगे जिसे पाने की लालसा लेकर यह सामने आया है। पिछले संग्रहों म गीतों और गजलों के साथ जो भूमिकाए दी गई थी उन्ह भी सभी ने बहुत उपयोगी बताकर उन्ह प्यार और सम्मान दिया। इसी लाभ म आकर इस संग्रह के साथ भी गजल से सम्बन्धित एक लम्बी भूमिका दे दी है। मुझे पूरा विश्वास है कि पाठकों को इस संग्रह की गजलों के साथ दी गई इस भूमिका का औचित्य इसलिए ध्यान म रहेगा क्योंकि शायद इससे हिन्दी म गजलें लिखने वाले कवियों को कुछ गजल के छन्दों और उनकी मुसन्नत का थोडा बहुत परिचय मिले। यदि फिर भी किसी को गजल संग्रह म यह भूमिका तनिक भी चुभे तो यह सोचकर क्षमा कर दें कि फूलों के साथ काटे भी रहते ही हैं।

इस अवसर पर मैं सभी अग्रज, समवयस्क एव अनुज कवियों साहित्यकारों, परिजनों पुरजनों एव दूर-दूर तक फैले पाठकों एव श्रोताओं का आभार प्रकट करना चाहता हू जिनके परामर्शों एव सद्भावनाओं के प्रतिफल के रूप मे यह संग्रह आपकी सेवा मे उपस्थित है।

मेरे हृदय के सरोवर मे एक नीलकमल भी है। जी हा, मैं बीते हुए समय को नीलकमल ही कहता हू। भले ही लोग इसे अन्धकार (dark) कहे पर मेरे हृदय मे तो बीता हुआ समय नीलकमल की तरह ही खिलता है वैसा ही सुकोमल, वैसा ही मोहक, वैसा ही मनोरम और वैसा ही तरल जल म झूमने वाला, वैसा ही निर्मल। हा, मेरी गजलों का प्रत्येक शब्द इसी नीलकमल की पखुरियों म भवरे की तरह बन्द है, मधुपान कर रहा है वा। अत उसके प्रति अपने हृदय की मचलती हुई लहरों के समर्पण के बिना यह पूजा अधूरी रहेगी। एक लाल बेंदी, पावों मे रचा महावर, एक निष्ठावान सिन्दूर और इनके साथ ही एक मौली

ममतामयी राखी, तथा दो भोले बचपनो की कुछ तलाशती हुई जिज्ञासु आँखें, ये सब, य सभी मेरी गजलो की परिधि के महत्त्वपूण बिंदु हैं, मैं इस अवसर पर इन सभी को यथोचित सम्मान और प्यार अर्पित कर रहा हू।

गुरुवर श्री कृष्ण बिहारी नूर का मैं किन शब्दा म आभार प्रकट करू जिन्होन मुझे गजल की बारीकियो से परिचित कराया।

आदरणीया दीदी डॉ० कल्याणी, प्रिय भाई सुकवि श्री कृष्ण मित्र, गजलो मे नई ताजगी भरने वाली कु० मीनाक्षी, रोगियो की सेवा म निरत डा० प्रबोध बसल एव डॉ० आरती बसल का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होने अपनी अपनी तरह से मुझे लेखन के लिए प्रेरित किया।

अत मे अयन प्रकाशन के सचालक श्री भूपाल सूद का भी मैं आभारी हू जिन्होने इस सग्रह के प्रकाशन मे अतिरिक्त रुचि ली तथा साज सज्जा और सम्पूण कलेवर को इस ढग से प्रस्तुत किया कि वह आकषक लग।

2 एफ 51, नेहरू नगर, —कुअर बेचैन
गाजियाबाद (उ प्र)

गजल पर बातचीत

एक बार एक मदारी मैहर[1] कस्बे मे ढोलक बजा-बजाकर कोई तमाशा दिखा रहा था। बडी भीड लगी थी। उधर से विश्व के प्रसिद्ध सरोद वादक बाबा अलाउद्दीन खा, जो मैहर म ही निवास करते थे, निकल रहे थे। वे कुछ सोच कर ठहरे और अचानक मदारी के गले से ढोलक निकालकर अपने गले मे डाल ली, और लगे जोर जोर से घूम झूम के ढोलक बजाने। सारे मैहर मे यह खबर बिजली की तरह फैल गई कि ससार के बडे सगीतकारो म से एक महान सगीतकार बीच बाजार म मदारी की ढोलक को अपने गले म डाले हुए बडी ही तल्लीनता मे बजा रहा है। बाबा जनता के बीच बहुत लोकप्रिय थे। अत सभी लोग अपने-अपने काम छोडकर वहा इकट्ठे होने लगे। खेल समाप्त हुआ। मदारी को जो उस दिन कमाई हुई वह और दिनो की अपेक्षा कई गुना थी। मदारी प्रसन्न था।

बाबा ने पूछा—"कहो, कैसी रही ?"

मदारी ने प्रसन्नता व्यक्त की और जब वह पैसे जेब मे डालकर आगे बढा तो बाबा ने उसे रोका और उसके गाल पर एक झापड रसीद किया। वह हैरत मे पड गया। बाबा ने कहा—"खबरदार जो तूने दोबारा इस मैहर म आने की हिम्मत की। और अगर आये भी तो तब आना जब तुझे ठीक से ढोलक बजानी आ जाय। मैहर के निवासियो के कानो को मैंने बडी कठिनाई से स्वर तालो को समझने म दीक्षित किया है और तू यहा उन्हे गलत सुनने की ट्रेनिंग देना चाहता है।'

कला के प्रति ऐसी सादगी अब कहा मिलेगी ? कला की रक्षा के लिए इतना

---

1 मैहर म० प्र० का जगत्प्रसिद्ध कस्बा है जहा समस्त कामनाओ को पूर्ण करने वाली मा सरस्वती का महान मदिर है। यहीं के निवासी मेरे मित्र डॉ० जैन ने मुझे यह घटना सुनाई।

सामान्य हो जाना कि बिना किसी श्रम के मदारी की ढोलक लेकर बीच बाजार कोई उसे बजा उठे। कहा मिलेगा कला के प्रति ऐसा समर्पण?

गजल हो या गीत, या फिर कला की कोई भी विधा, सभी में ऐसा ही समर्पण चाहिए। और गजल तो समाज से बहुत तेजी और गहराई से सम्बन्ध स्थापित करने वाली विधा है। उसमें एक ऐसा आकर्षण है जो श्रोता के मन को एकदम मोह लेता है। यदि गजल को गलत रूप में प्रस्तुत किया गया तो श्रोता के कान उस गलत रूप को सुनने या पढ़ने के अभ्यस्त हो जायेंगे, जैसाकि आजकल अक्सर देखने में भी आ रहा है और फिर स्वस्थ गजल के प्रति लोगों का भाव उपेक्षा का हो जाएगा। गजल भी भीड़ में जाकर बाबा अलाउद्दीन खा द्वारा बजाई गई ढोलक की मोहकता ही है। इसीलिए मैं यह कह रहा हूँ कि गजल की कलात्मकता अद्वितीय है। बहर (छन्द) बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव, वाक्य विन्यास, शब्द योजना सादगी, प्रवाह, अर्थ गाम्भीर्य, उन्नत कल्पना, प्रभाव, सुस्पष्टता सम्प्रेषण भाव और विचारों की अदायगी आदि कितनी ही ऐसी बातें हैं जिनका ध्यान गजल में बहुत रखना होता है। गजल कहना देखने में जितना आसान लगता है उतना ही उसमें कहना कठिन है।

इसका अर्थ यह भी नहीं कि गजल कलात्मकता के फेर में इतनी रम जाय कि यथार्थ की जमीन ही छोड़ दे। यथार्थ तो एक घटना है और उसके भीतर छिपे सत्य को बाहर लाना कलाकार का कार्य है। गजल ऐसे ही अनुभव सत्यों को बाहर लाती है इसलिए गजल को यथार्थ की भूमि पर रहकर कहीं पाव जमाये हुए भीतर ही भीतर उड़ना होता है। यद्यपि यह कार्य बहुत कठिन है, किन्तु गजल को यही कठिन कार्य करना होता है। जिस कला की आख समाज की ओर नहीं होती वह कला चाहे मंदिर की सीढ़ियों पर ही क्यों न खड़ी हो, वह सच मायने में कटघरे में खड़ी है। वह मुलजिम है कोई न कोई उसे सजा जरूर देगा। खोखली कलात्मकता कलात्मकता होते हुए भी बास ही रह जाती है वह बांसुरी तभी बनेगी जब वह सीने पर घावों को सहन की हिम्मत करेगी, जब उसमें प्राण फूक जायेंगे जब हृदय की वेदना उसमें ऊपर उठेगी और उसमें होकर गुजरेगी।

इस संदर्भ में एक बात याद आई। एक योगी अपने गुरु के पास गया और कहने लगा— मैंने चौदह वर्ष जंगल में रहकर योगाभ्यास किया, फलस्वरूप मैंने पानी के ऊपर चलने की दैवी शक्ति पा ली है। मेरी योग साधना सफल हुई।' गुरु ने उत्तर दिया— तुमने व्यर्थ ही चौदह वर्षों का कष्ट झेला। आठ दस आने में मांझी ही तुम्हें पार पहुंचा सकता था। तुमने जो सिद्धि पाई है, वह आठ दस आने के मूल्य की है।

सचमुच साहित्य साधना न तो किसी चमत्कारपूर्ण सिद्धि को प्राप्त करने के

लिए होती है और न वह अपने लिए होती है। वह तो दूसरों को तैरना सिखाने जैसी प्रक्रिया है। डूबते को बचाने का संकल्प है, धाराओं को मोड़ने का पराक्रम है। ग़ज़ल व्यक्ति को तराती ही नहीं वरन हल्का करके बहाती है, उसे छूती है उसे भिगोती है। वह अगर उसे डुबाती भी है तो उबारने के लिए ही।

आप नदी के किनारे पर खड़े हैं और नदी के बीचों-बीच आप एक तेज भागती हुई लहर पर बहती हुई खाली गागर को इधर-उधर शीश पटकते देख रहे हैं। यह कोशिश में है कि उसमें कुछ जल भर जाय। तेज बहती हुई धारा उसे घुमा रही है, नचा रही है बहा तो रही है किन्तु भर नहीं रही। ठीक ऐसे ही ज़िन्दगी की धारा बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ती जाती है और हम उस पर बहते हुए भी अपने खालीपन को भरने के लिए शीश पटकते रहते हैं, किन्तु असफल।

कभी कभी कोई ऐसा स्थल भी आता है जहाँ यह नदी की धारा रुक रुककर बहती है, ठहर जाना चाहती है—अपने ही भीतर बहने के लिए। बस ये पल ही खालीपन को भरने वाले पल होते हैं। खाली गागर जैसे ही भरी कि वह भारी हुई जैसे ही भारी हुई कि डूबी। मगर उसका यह डूबना ही उबरना है। डूबना उबरना भी हो सकता है यह साहित्य में ही सम्भव है। अब वह पानी की ऊपरी सतह पर न बहकर पानी के तल में भरी भरी धीमे धीमे आगे बढ़ती है।

ग़ज़ल इसी तेज़ भागती हुई ज़िन्दगी की धारा पर रुक रुककर अनुभवों के जल को पीकर डूबने वाली उसी गागर के समान है जो भीतर-भीतर कहीं चल रही है, बह रही है, तैर रही है—अनदेखे, अनजाने।

इसलिए मैं यह कह रहा हूँ कि ग़ज़ल तराती ही नहीं, डुबाती भी है, डुबाती ही नहीं बहाती भी है।

ग़ज़ल का भीतरी उद्देश्य संसार को उसके सौन्दर्य के प्रति उन्मुख करना और उसे प्रेम की गहराई में उतारना है। इसीलिए ग़ज़ल हुस्न और इश्क की कविता रही है। ग़ज़ल का दूरगामी उद्देश्य संसार को प्रेम के जल में नहलाना है। ग़ज़ल ऐसी विधा है जो प्रेम करना और प्रेम को समझना सिखाती है। इसमें प्रेम का संसार और प्रेम के संस्कार दोनों ही हैं।

एक संन्यासी, जिन्हें अमेरिका जाना था, एक बार सिस्टर निवेदिता के पास आए और अमेरिका में जाकर वेदान्त के प्रचार की प्रणाली पर प्रश्न किया। सिस्टर निवेदिता ने एक क्षण सोचा फिर संन्यासी से पास में ही रखे हुए चाकू को उठाकर देने की प्रार्थना की। संन्यासी ने तुरन्त धार वाला हिस्सा अपनी ओर रखकर काठ वाला भाग सिस्टर निवेदिता को पकड़ा दिया। सिस्टर निवेदिता प्रसन्न होकर बोली—"विदेश में भी कार्य करने की उचित शैली यही है।

झंझटों के सामने स्वयं रहो और सुरक्षित भाग दूसरों के लिए छोड़ दो।"

गजलकार का कार्य भी यही है। वह चाकू की नोक अपनी ओर रखता है और संसार को प्यार बाँटता है। कठिनाइयों और समस्याओं में खुद जूझता है और चाहता है कि दुनिया सुखी रहे। इस अर्थ में प्रत्येक कवि उसी सन्यासी की भूमिका अदा करता है।

किन्तु यहीं एक बात और भी समझ लेने की है और वह इसके विपरीत सी लगेगी, जबकि वह इसके विपरीत है नहीं। वह बात यह है कि आज के गजलकार को कभी कभी और कहीं कहीं ऐसा भी करना पड़ा है कि उसने धारदार हिस्सा अपनी ओर न रखकर दूसरी ओर रखा है किन्तु यह पकड़ किसी डाकू या हत्यारे द्वारा किसी चाकू की पकड़ नहीं है वरन एक सर्जन' द्वारा हाथ में लिया गया चाकू है जिसका उद्देश्य किसी फोड़े आदि का 'आपरेशन' करके मरीज को ठीक करना है। आज के गजलकार ने भी समाज के बदन पर उठे हुए कुरीतियों, रूढ़ियों तथा शोषण के फोड़ों के आपरेशन के लिए गजल का इस्तेमाल किया है। उद्देश्य यही है कि समाज रोग मुक्त हो और उसे जीवन मिले जिसमें वह सुंदर और प्रेम करने लायक बने। ठीक से सोचा जाय तो 'आपरेशन' से पहले और आपरेशन की प्रक्रिया में सर्जन का मरीज के प्रति प्रेम का भाव ही छिपा रहता है। चाकू की हर चुभन थोड़ी देर के लिए विचलित तो करती है दर्द तो देती है किन्तु उसकी हर चुभन से एक दर्द बाहर भी निकलता है, ऐसा दर्द जो जीने के मार्ग में व्यवधान बना था। गजल में यदि प्रहार मिलता है तो वह मारने के लिए नहीं वरन जिलाने के लिए। जब गजल के सामने पूरा समाज एक इसी इकाई बन कर सामने आता है जिसमें सर्वहारा की प्रताड़ना छिपी रहती है। आज की गजल समाज की इसी इकाई के दुख निवारण की सौंदर्यमाला भी है।

गजल के सन्दर्भ में बातचीत करते हुए एक यह बात बहुत ध्यान देने की है कि गजल का कोई भी शायर यह नहीं कहता कि उसने गजल लिखी है। वह जब भी कहेगा तो यही कहेगा कि उसने यह गजल 'कही' है। उर्दू के शायर ऐसा भले ही किसी भी कारण से कहते हों किन्तु मुझे जो इसमें रहस्य छिपा नजर आया वह बड़ा रोचक और साहित्यिक है तथा गजल की भाषा और शिल्प से सम्बन्ध रखने वाला है। 'लिखने' और 'कहने' का अन्तर भले ही अलग अलग मामला है किन्तु हम यहीं मामला गजल की भाषा के करीब ले आते हैं। 'लिखने' शब्द में किसी भी बात के कागज पर लिपिबद्ध होने का प्रमाण मिलता है जबकि 'कहने' शब्द में बातचीत का भाव या किसी को कुछ सुनाने की बात का भाव ही निहित है। 'कहना' लिपिबद्ध होना नहीं है। इसी बात को यदि दूसरे शब्दों में कहा जाय तो यूँ कहा जा सकता है कि गजल की भाषा

बोल चाल की भाषा होती है, लिखने वाली भाषा की अतिरिक्त साहित्यिकता का बोझ वह सहन नहीं करती। जो बोली जाने वाली और कहन सुनने से सम्बन्ध रखने वाली भाषा है, उसी में गजल 'कही' जाती है, भले ही आप बाद में लिपिबद्ध कर लें। तात्पर्य यह है कि गजल की भाषा लिखने से पहले, बोल-चाल की भाषा है।

इस रहस्य को जानने के बाद ही हम गजल की भाषा की अनेक तकनीकी स्थितियों का पता चलेगा। कम गजल में बहर में रहते हुए किसी निश्चित स्थान पर मात्राओं का उठना गिरना या लघु का दीर्घ और दीर्घ का लघु पढना क्षम्य है, कैसे गजल की भाषा में सहजता रहती है कैसे गजल का जादू सिर पर चढ़ कर बोलता है, क्यों गजल का प्रभाव हृदय प्रदेश पर अपना सम्पूर्ण साम्राज्य स्थापित कर लेता है आदि आदि, महत्त्वपूर्ण बातों के ताले केवल इसी चाबी से खुल जाते हैं कि गजल 'लिखी' नहीं 'कही' जाती है।

भाषा विज्ञान में एक पारिभाषिक शब्द है 'मुख सुख'। अनेक ऐसे शब्द हैं जिन्हें हम चाहे लिखें किसी भी तरह मगर बोलने में सुविधा की दृष्टि से अक्सर वे और तरह बोले जाते हैं। जैसे एक शब्द है 'मास्टरसाहब'। अक्सर हम देखते हैं कि जल्दी में इस शब्द का उच्चारण 'मास्टर साहब' न होकर 'मास्साब' हो जाता है। इसका मुख्य कारण 'मुख सुख' ही है। मुख अपने आप ही बोलने की आसानी के अनुसार अपने सुख के लिए शब्द का उच्चारण भी बदल देता है। गजल की भाषा प्रायः मुख सुख की भाषा ही है और इसका भी कारण यही है कि गजल 'लिखी' नहीं जाती 'कही' जाती है। 'भाई साहब' शब्द भी इसी प्रकार का दूसरा उदाहरण है जिसे अक्सर 'भाइ सा'ब' रूप में उच्चरित किया जाता है। इस रहस्य को जानने के बाद ही गजल की बहरों की पहचान तथा उनकी तक्तीअ करने का कार्य सुविधापूर्वक हो सकता है। यहाँ हम मीर तकी 'मीर' जैसे प्रसिद्ध शायर की गजल का मतला (प्रारम्भिक दो पंक्तियाँ) प्रस्तुत कर रहे हैं और उसी के माध्यम से इस बात को समझने का प्रयास करेंगे—

गम रहा जब तक कि दम में दम रहा
दिल के जाने का निहायत गम रहा

उपर्युक्त मतले में जिस 'अर्कान'[1] का प्रयोग हुआ है वह यह है—फायलातुन फायलातुन फायलुन। इसका प्रयोग भी देखें—

फायलातुन	फायलातुन	फायलुन
गम रहा जब	तक कि दम में	दम रहा
दिल के जाने	का निहायत	गम रहा

1. अर्कान उस सूत्र को कहते हैं जिसके अनुसार किसी ग़ज़ल की बहर (छन्द) बनती है।

यदि हम अर्कान या हम सम्पूर्ण छन्दों की दशाक्षरियो के चिह्नो में अंकित करें तो इस प्रकार करेंगे—

फा य ला तुन	फा य ला तुन	फा य लु न
S I S I I	S I S I I	S I I I

यहा 'S' दो मात्राओ के लिए प्रयुक्त है, इसे 'गुरु' कहते हैं तथा 'I' चिह्न एक मात्रा के लिए प्रयुक्त है, इसे लघु कहते हैं। सुविधा की दृष्टि से तथा ग़ज़ल की बहर के करीब तक पहुंचने की दृष्टि से, जहा पर 'दो लघु' हैं और दोनो अन्त में एक साथ बोले जाते हैं—जिन्हे उर्दू मे सबब कहते हैं—उन्हे हम 'गुरु' के रूप में परिवर्तित किए लेते है, अर्थात दो लघु मात्राओं को एक दीर्घ रूप मे। जैसे—

फाय ला तुन	फा य ला तुन	फा य लुन
S I S S	S I S S	S I S

अब इसी के अनुसार मीर तकी 'मीर' के मतले की फिर 'तक्तीअ' कर रहे हैं—

S I S S	S I S S	S I S	
फा य ला तुन	फा य ला तुन	फा य लु न	
गम र हा जब	तक कि दम मे	दम र हा	—(1)
दिल के जा ने	का नि हा यत	गम र हा	—(2)

उपर्युक्त मतले मे न० 2 की पंक्ति (मिसरा सानी) को ध्यान से देखें। इसमे 'दिल' शब्द के बाद जो 'के' शब्द आया है वह 'ए' की मात्रा से युक्त होने के कारण लघु (I) न होकर गुरु (S) होना चाहिए, किन्तु प्रस्तुत मतले मे बद्ध यह शब्द प्रथम पंक्ति मे प्रयुक्त 'गम' शब्द के तुरन्त बाद आने वाले 'रहा' शब्द के 'र' वर्ण के ठीक नीचे है जब कि 'र' लघु है। देखने मे यह मात्रा की दृष्टि से अशुद्ध है किन्तु बोलने मे अशुद्ध नही लगता क्योकि यहा 'दिल के जाने' मे 'के' का उच्चारण 'क' की तरह हो रहा है। कारण वही है कि ग़ज़ल 'कही' जाती है लिखी नही जाती। अब दूसरी पंक्ति को 'लिख कर' नही 'कहकर' देखें। आप स्वयं देखेंगे कि दूसरी पंक्ति का 'के' शब्द दो मात्राओ वाला होकर भी एक मात्रा में ही बोला जा रहा है यद्यपि 'के' के स्थान पर केवल 'क' शब्द होना तब मात्रिक दृष्टि से ठीक होता। किन्तु बोले जाने के कारण ही वह शुद्ध है। इसी कारण मैं यह दोबारा कहना चाहता हू और चाहता हू कि हम इस बात को अपने मस्तिष्क मे कही रेखांकित करें कि ग़ज़ल बोलचाल की भाषा में लिखी जाती है।

इसी प्रकार अनेक स्थलो पर 'मेरा' के स्थान पर 'मिरा', 'तेरा' के स्थान पर 'तिरा' तथा इस प्रकार के और भी अनेक शब्दो को ग़ज़लो मे ह्रस्व करके बोला जाता है। उदाहरण देखें—

'न सिर्फ है तेरी 'कुअर', यह हर किसी की बात है।

यहा भले ही 'तेरी' शब्द लिखा गया हो, मगर पढा 'तिरी' ही जायगा।

कुछ और शब्द भी है जो गज़लो म बहुत प्रयुक्त होते हैं किन्तु उन्हे 'बह्र' के हिसाब मे आवश्यकतानुसार कभी लघु और कभी 'गुरु' के रूप म 'कहा' जाता है। जैसे 'तो', 'है', 'जो', 'यह' आदि।

ऐसा नही कि यह केवल गजलो मे ही हुआ हो, सस्कृत के वार्णिक छदो तक मे कही-कही ऐसी छूट मिल जाती है जबकि उनमे तो लघु के क्रम मे लघु तथा गुरु के क्रम मे गुरु वर्ण लाना एक आवश्यक शर्त है।

गजल मे स्वरो और स्वर मैत्री का बडा ही महत्त्व है। एक से स्वर के एक साथ आने से गजल की 'कहन' चमत्कारपूर्ण, सहज, प्रभावशाली तथा गेय बनती है। उसको स्वर-मैत्री के कारण प्रवाह भी मिलता है और प्रभाव भी। अन्यथा कभी कभी स्वर मैत्री के अभाव म कई शब्द ठोकर-से भारत महसूस होते है। स्वर मैत्री का एक नमूना देखें—

हुए हमारे साथ ही नये नये ये हादसे
मिली थी मजिलें, मगर न तय कोई सफर हुआ

उपर्युक्त शेर मे प्रथम पक्ति (मिसरा ऊला) म यदि ध्यान से देखा जाय तो 'ए' स्वर की मैत्री ही अधिक है। 'हुए' शब्द म भी 'ए' स्वर है, 'हमारे' शब्द म 'रे' मे भी 'ए' स्वर है, 'नये' 'नये' 'ये' इन तीनो शब्दो के 'ये' मे 'ए' स्वर है, 'हादसे' शब्द के 'से' मे भी 'ए' स्वर है। यहा 'ए' की स्वर मैत्री सोचकर नही लाई गई है, बरन अनायास अपने आप आ गई है, कारण है 'मुख सुख', अर्थात बोल चाल का सदर्भ। इसी कारण प्रथम पक्ति म प्रवाह (Flow) बहुत है। अब आप कल्पना करके देखें (अर्थ पर ध्यान न दें) कि 'नये नये ये हादसे' के स्थान पर 'नये नयी यी हादसे' प्रयोग होता तो शायद इनका ठीक से उच्चारण भी नही हो पाता। 'यी' का 'य' गायब हो जाता और केवल 'ई' का प्रयोग ही रह जाता और सुनने वाले की समझ मे पूरा शब्द आता ही नही। किंतु यहा जो स्वर मैत्री आ गई वह इसी बात का चमत्कार है कि गजल लिखी नही, 'कही' जाती है। क्योकि बोलचाल की भाषा से उच्चारण बोध की सहज प्रक्रिया जुडी रहती है।

गजल म वाक्य विन्यास का बडा महत्त्वपूर्ण स्थान है। गजल मे कलात्मक सौंदर्य की प्रथम और सबसे महत्त्वपूर्ण सीढी उसका वाक्य विन्यास ही है। यह

यदि इस अर्कान को हम संस्कृत छन्दों की दशाक्षरियों के चिह्नों में अंकित करें तो इस प्रकार करेंगे—

फा इ ला तुन फा इ ला तुन फा इ लु न

S I S I I S I S I I S I I I

यहां 'S' दो मात्राओं के लिए प्रयुक्त है इसे 'गुरु' कहते हैं तथा 'I' चिह्न एक मात्रा के लिए प्रयुक्त है इसे लघु कहते हैं। सुविधा की दृष्टि से तथा ग़ज़ल की बह्र के करीब तक पहुंचने की दृष्टि से, जहां पर 'दो लघु' हैं और दोनों अन्त में एक साथ आते जाते हैं—जिन्हें उर्दू में सबब कहते हैं—उन्हें हम 'गुरु' के रूप में परिवर्तित किए लेते हैं, अर्थात दो लघु मात्राओं को एक दीर्घ रूप में। जैसे—

फाइ ला तुन फा इ ला तुन फा इ लुन

S I S S S I S S S I S

अब इसी के अनुसार मीर तक़ी 'मीर' के मतले की फिर 'तक़तीअ' कर रहे हैं—

S I S ऽ S I S S S I S

फा इ ला तुन फा इ ला तुन फा इ लु न

गम र हा जब तक कि दम में दम र हा —(1)

दिल के जा ने का नि हा यत गम र हा —(2)

उपर्युक्त मतले में नं० 2 की पंक्ति (मिसरा सानी) को ध्यान से देखें। 'दिल' शब्द के बाद आने वाला [illegible] शब्द आया है वह 'ए' की मात्रा से युक्त [illegible] कारण लघु (I) न होकर गुरु (ऽ) होना चाहिए, किन्तु प्रस्तुत मतले में [illegible] शब्द प्रथम पंक्ति में प्रयुक्त 'गम' शब्द के तुरन्त बाद आने वाले 'र' [illegible] लघु है। [illegible] यह मात्रा की अशुद्धि है किन्तु वास्तव में अशुद्ध नहीं मानी क्योंकि यहां 'दिल के जा' का उच्चारण [illegible] हो रहा है। कारण यही है कि [illegible] है [illegible]। अब दूसरी पंक्ति को [illegible] दूसरी पंक्ति का [illegible] दो मात्राओं में [illegible]

में कहे गए हैं। वाक्य विन्यास वक्ता के हृदय की दशा के अनुसार भी अपना रूप ग्रहण करता है। जरा भी शब्दों को इधर-उधर करने से, कभी-कभी, कोई वाक्य पूरे के पूरे माहौल को बदलने की शक्ति रखता है। 'दिले नादां तुझे हुआ क्या है' पंक्ति में जिस हृदय की दशा की अभिव्यक्ति हुई है, उस हृदय की अभिव्यक्ति वाक्य विन्यास का कोई और रूप बदलते से नहीं हो सकती थी। वाक्य विन्यास का यह प्रभावशाली चमत्कार जिस कारण ग़ज़ल में आ सका इसका प्रमुख कारण भी वही सूत्र है कि गजल 'लिखी नहीं जाती, 'कही' जाती है।

अच्छी गज़ल कहने के लिये यति गति का भी बहुत ध्यान रखा जाता है। इसी कारण गज़लों की बह्रों का निर्माण हुआ। बह्र वह अंकुश है जिसका अर्थ गज़ल के प्रत्येक मिसरे के गजराज को मस्ती से चलने का संकेत देता है, बह्र वह वज़न है जिसमें वज़न में शब्दों की महत्ता खुलती है। बह्रों का सामान्य परिचय मैंने अपनी पुस्तक 'शामियाने कांच के' तथा 'रस्सियां पानी की' में विस्तार से दिया है, अतः यहां उनके बारे में कुछ नहीं कह रहा हूं, फिर कभी मौका मिला तो विस्तार में उनकी चर्चा करूंगा।

यहां मैं एक बात यह कहना चाहता हूं कि जो लोग गजल की बह्रों से अपरिचित हैं तथा उनमें उलझना नहीं चाहते वे चाहें तो वे भी बह्र में ही गजल लिख सकते हैं। इसका सबसे पहला उपाय यह है कि जो पंक्तियां गजल के 'मतले' (गज़ल की प्रारम्भिक पंक्तियां) या शेर' के रूप में उनके मस्तिष्क में आ रही हैं, उन्हें कागज पर लिख लें। उदाहरण के लिये मान लीजिये यह एक पंक्ति मस्तिष्क में आई—

हम कहां रुसवा हुए रुसवाइयों को क्या खबर

इसे आधार पंक्ति मान कर आगे की पंक्तियां लिखनी चाहिए। मैं यहां पर 'लिखने' शब्द का प्रयोग जान बूझकर कर रहा हूं। क्योंकि नये लेखक को इसी प्रक्रिया से होकर गुजरना पडेगा तब वह ठीक गजलें 'कह' सकेगा। अब अपनी इस आधार पंक्ति को बार-बार पढना चाहिए। पढते पढते फिर यह सोचना चाहिए कि यदि हम इसे दो टुकडों में पढना चाहते तो कौन से दो टुकडे बनाते। जैसे ऊपर लिखे मिसरे को हम सरलता से इन दो टुकडों में बांट सकते हैं—

हम कहां रुसवा हुए / रुसवाइयों को क्या खबर

1 2

मिसरे को सही टुकडों में बांटने की सही परख इस बात से हो जाती है कि हम यह देखें कि हम पढते समय कहां रुकना पड रहा है। अब इसी मिसरे को दो टुकडों में बांटने के बजाय तीन टुकडों में बांट कर देखें। तीन टुकडों में बांटने पर शायद इसका यह रूप अधिक अच्छा रहेगा—

बात जानकर शायद सभी को आश्चर्य हो कि ग़ज़ल का प्रत्येक शेर जितना ही गद्यात्मक वाक्य विन्यास के करीब होगा, कलात्मकता तथा प्रभाव की दृष्टि से वो उतना ही ख़ूबसूरत होगा। ग़ज़ल के मिसरों का वाक्य विन्यास बिल्कुल ऐसा ही होना चाहिए जैसा कि हम गद्य में बोलते हैं। ग़ालिब की महानता इसी में सुरक्षित है कि उनका वाक्य विन्यास गद्यात्मक है। कोई शेर भाषा एवं शैली की दृष्टि से अच्छा हुआ है कि नहीं इसकी परख यही है कि उस शेर को कहते समय यह भी सोचते चलो कि यदि हमारे सामने कोई खड़ा होता और उससे हम बात चीत कर रहे होते तो क्या हम ठीक ऐसे ही बात कहते। जैसे कि हम शेर कह रहे हैं। उदाहरण के लिए ग़ालिब की ही एक ग़ज़ल के मतले का शेर देखें—

दिले नादाँ ! तुझे हुआ क्या है
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है

उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़कर देखिए। आप यही पायेंगे कि उनका वाक्य विन्यास गद्यात्मक है। यदि कोई व्यक्ति पहली पंक्ति को गद्य में बोलना चाहता तो वह ऐसे ही बोलता जैसी कि यह लिखी हुई है। दूसरी पंक्ति को भी ऐसे ही बोलता। बात को समझने के लिए हम प्रथम पंक्ति को ही आधार बना रहे हैं। प्रथम पंक्ति का कोई भी शब्द इधर उधर कर देने से हम देखेंगे कि उसकी गद्य जैसे वाक्य विन्यास की सहजता नष्ट हो जायगी। इस बात का विश्लेषण करने के लिये हम इस मिसरे को कई प्रकार से रखकर देखते हैं—

(1) तुझे दिले नादाँ क्या हुआ है
(2) क्या हुआ है दिले नादाँ तुझे
(3) तुझे दिले नादाँ है क्या हुआ
(4) क्या हुआ है तुझे दिले नादाँ

उपर्युक्त वाक्य विन्यासों में हम देख रहे हैं कि वह बात नहीं आ पायी जो बात इस पंक्ति में थी—

'दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है

इसका कारण यह भी है कि इस पंक्ति में 'दिले नादाँ' शब्द सबसे पहले आया है। अक्सर जब हम किसी से बात कर रहे होते हैं और उसको सम्बोधित करने की आवश्यकता भी महसूस कर रहे होते हैं तो सम्बोधन से ही वाक्य का प्रारम्भ करते हैं, जैसे 'भैया जरा हमारी बात सुनना' वाक्य में 'भैया' सबसे पहले आया। 'भैया' जैसी ही सहजता 'दिले नादाँ' शब्द में भी मिसरे में सबसे प्रारम्भ में आने के कारण आ गई है। यही इसका सौन्दर्य है।

वाक्य विन्यास के सन्दर्भ में एक और भी महत्त्वपूर्ण बात समझ लेने की है। वह बात यह है कि किसी भी शेर के मिसरों की गठन की परख करते समय यह भी सोचते रहना चाहिए कि वे किस माहौल (Atmosphere) या किन हालात

में कह गए हैं। वाक्य विन्यास वक्ता के हृदय की दशा के अनुसार भी अपना रूप ग्रहण करता है। ज़रा भी शब्दों को इधर उधर करने से, कभी-कभी कोई वाक्य पूरे के पूरे माहौल को बदलने की शक्ति रखता है। 'दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है' पंक्ति मे जिस हृदय की दशा की अभिव्यक्ति हुई है, उस हृदय की अभिव्यक्ति वाक्य विन्यास का कोई भी रूप बदलने से नहीं हो सकती थी। वाक्य-विन्यास का यह प्रभावशाली चमत्कार जिस कारण ग़ज़ल मे आ सका, इसका प्रमुख कारण भी वही सूत्र है कि ग़ज़ल 'लिखी नहीं जाती, 'कही' जाती है।

अच्छी ग़ज़ल कहने के लिए यति गति का भी बहुत ध्यान रखा जाता है। इसी कारण ग़ज़लो की बह रो का निर्माण हुआ। बह र वह अंकुश है जिसका अर्थ ग़ज़ल के प्रत्येक मिसरे के गजराज को मस्ती से चलने का संकेत देता है, बह र वह वज़न है जिसमे वज़न मे शब्दो की महत्ता खुलती है। बह रो का सामान्य परिचय मैंने अपनी पुस्तक 'शामियाने काँच के' तथा 'रसिया पानी की' मे विस्तार से दिया है, अत यहा उनके बारे मे कुछ नही कह रहा हू, फिर कभी मौका मिला तो विस्तार मे उनकी चर्चा करूगा।

यहा मैं एक बात यह कहना चाहता हू कि जो लोग ग़ज़ल की बह रो से अपरिचित हैं तथा उनमे उलझना नही चाहते वे चाहें तो वे भी बह र मे ही ग़ज़ल लिख सकते है। इसका सबसे पहला उपाय यह है कि जो पंक्तियां ग़ज़ल के 'मतला' (ग़ज़ल की प्रारम्भिक पंक्तियां) या शेर के रूप मे उनके मस्तिष्क मे आ रही हैं, उन्हे कागज़ पर लिख लें। उदाहरण के लिए मान लीजिए यह एक पंक्ति मस्तिष्क मे आई—

हम कहा रुसवा हुए रुसवाइयो का क्या खबर

इस आधार पंक्ति मान कर आगे की पंक्तियां लिखनी चाहिए। मै यहा पर 'लिखने' शब्द का प्रयोग जान-बूझकर कर रहा हू। क्योंकि नये लेखक को इसी प्रक्रिया मे होकर गुजरना पडेगा तब वह ठीक ग़ज़लें 'कह' सकेगा। अब अपनी इस आधार पंक्ति को बार-बार पढना चाहिए। पढते पढते फिर यह सोचना चाहिए कि यदि हम इसे दो टुकडो मे पढना चाहते तो कौन से दो टुकडे बनाते। जैसे ऊपर लिखे मिसरे को हम सरलता से इन दो टुकडो मे बाट सकते हैं—

हम कहा रुसवा हुए / रुसवाइयो को क्या खबर

1 2

मिसरे को सही टुकडो में बाटने की सही परख इस बात से हो जाती है कि हम यह देखें कि हम पढते समय कहा रुकना पड रहा है। अब इसी मिसरे को दो टुकडो मे बाटने के बजाय तीन टुकडो मे बाट कर देखें। तीन टुकडो मे बाटने पर शायद इसका यह रूप अधिक अच्छा रहेगा—

हम कहाँ रुसवा हुए / रुसवाइयों को / क्या खबर
1 2 3

अब यह देखें कि वाचन की दृष्टि से बिना किसी बनावट के क्या इसके और भी टुकड़े हो सकते हैं। तीन से चार टुकड़ों में यह मिसरा बड़ी आसानी से बाँटा जा सकता है। जैसे—

हम कहाँ / रुसवा हुए / रुसवाइयों को / क्या खबर
1 2 3 4

टुकड़े बाँटते समय यह भी ध्यान रखें तो अच्छा रहेगा कि टुकड़ा 'गुरु' (S) पर समाप्त हो और एक टुकड़े में कम से कम पाँच मात्राएँ अवश्य रहें। इन बातों के साथ साथ यदि प्रत्येक टुकड़ा अपने में पूर्ण हो अर्थात् उसमें आने वाले शब्दों में से आखिरी शब्द का अंतिम वर्ण दूसरे टुकड़े में प्रवेश न करे तो सोने में सुहागा है। अब इसी मिसरे को लघु गुरु के निशानों से सजा लेना चाहिए। ऐसी स्थिति में गज़ल को गाने में बड़ी सुविधा रहती है। अब पहले मिसरे की यह स्थिति हमारी बहर हो गई। अन्य पंक्तियों को कहते रहिये और उन्हें इसी क्रम में रखने की कोशिश कीजिये। गज़ल बेबहर नहीं हो पायेगी। जैसे इसी मिसरे से जुड़ी हुई गज़ल का मतला और एक शेर देखें—

S I S S S I S S S I S S S I S
हम क हाँ / रुस वा हुए / रुस वा इ यों को / क्या ख बर
डू ब कर / उब र न क्या / गह रा इ यों को / क्या ख बर
कब त ड़प / कर रह ग ई / दिल में ह मा रे / बिज लि याँ
कब ये दिल / बा दल हुआ / अँग ड़ा इ यों का / क्या ख बर

उपर्युक्त चार पंक्तियों को 16 टुकड़ों में बाँटा गया है। टुकड़ों को ध्यान से देखने पर ज्ञात होगा कि प्रत्येक टुकड़े के अन्त में दीर्घ स्वर अर्थात् गुरु (S) ही है। जब कहीं दो लघु एक साथ बोले जा रहे हों, आप उन्हें बोलते समय अलग न कर सकें, यदि करें भी तो बोलने में तकलीफ हो, ऐसे दो लघु गुरु के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। अक्सर ये दो लघु किसी शब्द के बाद ही दो वर्ण होते हैं। यदि वह शब्द तीन अक्षरों का हो जैसे—सफर, बिखर, तपन, चमन आदि। बोलने में हम यही पायेंगे कि हम 'सफर' शब्द को दो टुकड़ों में यदि पढ़ें तो स फर यही दो टुकड़े होंगे। यदि हम इसे सफ र पढ़ें तो उच्चारण भी 'सफ़' होने के कारण गलत हो जायगा और सही पढ़ने में असुविधा भी होगी। यदि चार वर्णों का कोई शब्द है तो प्रथम दो वर्णों में दो लघु होने पर भी उन्हें गुरु के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है जैसे 'करवट' शब्द में क र व ट चार लघु (। । । ।) हैं किन्तु इन्हें दो हिस्सों में बाँट कर (कर वट) दो गुरु के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

उपर्युक्त प्रसग म भी हम यही देख रहे हैं कि गजल की व्याकरण लिखने पर नही बोलन पर ही निभर रहती है।

गजल के प्रत्येक शेर मे एक इस बात का भी ध्यान रखना पडता है कि हर शेर का हर मिसरा वाक्य वियास की दष्टि म तो लगभग पूण हो किन्तु उसका अथ या उसका मूल भाव दोना मिसरो के सयोग से ही प्रकट और पूण होता हो। इसी को 'रब्त' कहते हैं। यदि प्रत्येक मिसरे का अथ अपन म पूण होगा तो वह शेर की कमजोरी ही मानी जायेगी। गजल क मतले के शेर म अक्सर यही कठिनाई आती है। इसका कारण यह है कि मतले के दोना मिसरा म रदीफ (समान्त)[1] तो एक ही होता है, किन्तु काफिया (तुकान्त) अलग-अलग होते हैं। इसीलिए अधिकतर शायरो का कहना है कि गजल मे मतले का शेर कहना सबस कठिन है। नीचे दिए एक उदाहरण स यह बात और भी स्पष्ट हो जायगी—

दो चार बार हम जो कभी हस-हसा लिये
सारे जहा न हाथ म पत्थर उठा लिये

ऊपर की पक्तिया मतले की पक्तिया है। पहली पक्ति वाक्य की दष्टि से यद्यपि लगभग पूण है किन्तु उस पढन क बाद यह लगता है कि अथ की दृष्टि से यह वाक्य अभी अधूरा है। जब दूसरी पक्ति पहली पक्ति क स दभ मे आती है तब ही अथ की ध्वनिया प्रस्फुटित होती है। यहा यह कहना उचित ही होगा कि अलग अलग मिसरो म महसूस होने वाला अधूरापन ही शेर को पूण बनाता है।

उपयुक्त सभी स दर्भों म हमने एक यही बात देखी कि गजल म बोलचाल की भाषा का कितना महत्त्व है। बोलचाल की भाषा स ही उसम सहजता आती है और सहजता ही गजल का सबस बडा चमत्कार है।

जसाकि पिछले पष्ठो मे हमने यह जाना कि गजल का शायर हमेशा यह कहता है कि मैंने यह गजल 'कही' है। उसी प्रकार यदि वह 'शेर' के स दभ म इसी तरह की कोई बात करेगा तो यह कहेगा—'एक शेर हुआ है।' यहा भी वह 'लिखने' शब्द का इस्तेमाल नही करता, वरन 'हुआ' शब्द का प्रयोग करता है। इस प्रयोग के पीछे भी एक रहस्य है। गजल का शायर शायरी के स दभ मे अपनी सत्ता स्वीकार नही करता, वह यह मानता है कि कोई भी शायर कुछ लिख नही सकता। शायरी तो खुदा की मेहरबानी है। जब वह चाहता है तब ही वह आती है। शायरी कोई ऐसी चीज है जिसका इलहाम होता है। वह एक

---

1 रदीफ के लिए समान्त शब्द का इस्तेमाल शमशेर बहादुर के गजल सग्रह म सबसे पहली बार किया गया है।

स्वत स्फुरित होने वाला स्रोत है, नहर नहीं। जिस प्रकार स्रोत अपना रास्ता और अपने किनारे स्वय बनाता है उसी प्रकार भीतर से आने वाला प्रत्येक शेर अपनी बहर और अपनी अर्थ गरिमा की समस्त तरगें लेकर खुद चलता है। इन सभी बातो से यह ही स्पष्ट होता है कि गजल कोई भी बनावट स्वीकार नही करती। वह अत्यन्त सहज, सरल और सीधी सादी है। अपने प्राकृतिक रूप मे ही सुन्दर और आकर्षक।

'शेर लिखा नहीं जाता, हो जाता है'— इसके पीछे शायर की विनम्रता भी छिपी है। शायरी एक ऐसा स्रोत है जो शायर के हृदय से ही फूटता है और शायर को ही अपनी तरगो मे कभी डुबाता है कभी तराता है। शायर एक समय मे स्रोत है तो दूसरे समय मे नाव। वह खुद ही मिट्टी है और खुद ही उस मिट्टी से बनने वाली सूरत।

इन्ही कारणो से गजल को तहजीब (culture) कहा गया है क्योकि तहजीब शनै शनै अपने आप जन्म लेती है। गजल बात चीत करने का लहजा सिखाती है। क्या बात कहनी चाहिए यह बताती है। गजल वैसे तो अगारे को भी फूल बनाकर किसी के हाथो मे सौपने का तरीका है, मगर ऐसा फूल जिसकी आच हथेली को नही रूह को भी महसूस हो।

सामान्यत आजकल हिन्दी गजल और उर्दू गजल इन दो शब्दो का प्रयोग किया जा रहा है। मोटे तौर से हिन्दी गजल से आशय उस गजल से है जिसे हिन्दी के किसी कवि ने लिखा हो और जिसमे हिन्दी कविता की ही खुशबू हो। उर्दू गजल से आशय उन शायरो द्वारा लिखी हुई गजलो से है जिसे उर्दू जानने वाले शायर ने लिखा है और जिसमे उनके जातीय संस्कार और उनका अपना सामाजिक परिवेश दृष्टिगोचर होता है।

हिन्दी गजल मे सामान्यत निम्नलिखित विशेषताए होती है—

1 हिन्दी गजल वह गजल है जिसमे या तो सस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग हो या फिर बोल चाल की हिन्दुस्तानी का प्रयोग हो।

2 हिन्दी गजल मे मुख्य बात यह है कि उसमे चाहे बोल चाल की उर्दू के प्रचलित शब्दो का प्रयोग हो किन्तु उनकी सामासिकता मे उर्दू फारसी पद्धति का प्रयोग न होकर हिन्दी की प्रवृत्ति के दर्शन हो। उदाहरण के लिए उर्दू मे शामो-सहर 'दिल नादा' जैसे शब्दो का प्रयोग उपयुक्त रहेगा किन्तु हिन्दी गजल मे रूह 'शाम और सहर' 'नादान दिल' आदि रूप मे प्रस्तुत किया जायेगा।

3 हिन्दी गजल मे, उर्दू गजलो मे प्रयुक्त सज्ञाओ को एकवचन से बहुवचन मे बदलने के नियम के अनुसार सज्ञाओ को बदलने का नियम नही है जैसे एक शब्द है इनायत। उर्दू शायरी मे इनायत' का बहुवचन 'इनायात होगा,

किन्तु हिन्दी गजल मे इस शब्द-प्रयोग मे हिन्दी की व्याकरण के अनुसार बहुवचन बनाया जायेगा। जैसे रात का बहुवचन 'रात' है, उसी प्रकार 'इनायत' का बहुवचन 'इनायतें' बनेगा। ऐसा करने मे कोई भी एतराज उठाना एकदम अनुचित है क्योकि किसी भी भाषा की सज्ञा का जब दूसरी भाषा मे इस्तमाल किया जाता है तो दूसरी भाषा के नियम के अनुसार ही उसम परिवर्तन होते है।

4 हिन्दी गजल मुख्यत उन कवियो द्वारा कही गई गजल है जिनकी उर्दू की कोई अच्छी जानकारी तथा पृष्ठभूमि नही है, यदि है भी तो वह उनका प्रयोग इन गजलो के सदर्भ मे नही करते, बरन इसके विपरीत वे हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि एव उसी के सस्कार मे सस्कारित होते हुए गजल कहते हैं। यही कारण है कि हिन्दी गजल की शब्दावली एव साहित्यिक सोच का परिवेश उर्दू शायरी से भिन्न है।

5 हिन्दी गजलो मे कुछ गजलें ऐसी भी लिखी जा रही है जिनम वर्तमान हिन्दी कविता के प्रगतिशील विचारधारा वाले तेवर के भी दर्शन होते हैं और इन गजलो मे साफ बयानी भी दिखाई देती है तथा आक्रोश के स्वर की स्पष्ट अभिव्यक्ति भी रहती है। मुख्यत यह आक्रोश तथाकथित राज-नीतिज्ञो एव वर्तमान व्यवस्था म जो शोषक है, उन पर ही अभिव्यक्त हुआ है। यहा गजलो की मूल प्रकृति 'सुकोमलता' के गुण से दूर जाती दिखाई देती है, और उनमे तिक्तता एव कठोरता के दर्शन होते है। उर्दू म भी ऐसी गजलें कही गई है किन्तु उनम आक्रोश की अभिव्यक्ति साकेतिक भाषा म ही हुई है।

6 हिन्दी म कही जाने वाली गजल उर्दू गजल की तरह ही अपनी सुदीर्घ परम्परा के दार्शनिक तत्त्व को भी समेटे हुए है। प्राचीन हिन्दी कविता एव उर्दू कविता दोनो मे ही रहस्यवादी भावना के दर्शन होते है। इश्क मजाजी के माध्यम से इश्क हकीकी की अभिव्यक्ति उर्दू गजल की प्रधान विशेषता है। हिन्दी कविता की आधुनिक तथा प्राचीन प्रवत्तिया म भी यही स्वर देखने को मिलता है। 'इश्क मजाजी' का सम्बन्ध दुनिया के प्यार और 'इश्क हकीकी' का सम्बन्ध परमात्मा के प्रति प्यार से है। अक्सर उर्दू गजल प्रेमिका के प्रति प्रेमी का आत्म निवेदन है और उसम परमात्मा को प्रेमिका और भक्त को प्रेमी माना जाता है। यद्यपि हिन्दी कविता म अपनी सास्कृतिक परम्परा के अनुसार परमात्मा को प्रेमी एव आत्मा को प्रेमिका के रूप मे प्रदर्शित किया जाता है, किन्तु हिन्दी गजल म सूफी काव्य की तरह ही परमात्मा को प्रेमिका एव आत्मा को प्रेमी के रूप मे वर्णित किया जाता है।

7 हिन्दी गजल में उर्दू की तरह ही अनेक मिथकों का प्रयोग किया जाता है। मिथकों को प्रत्येक साहित्य अपनी पौराणिक सम्पदा म अर्जित करता है। और प्रत्येक जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय की अपनी अलग पौराणिक सम्पदा होती है। अतः विभिन्न भाषाओं के साहित्य में प्रयुक्त मिथकों में भी विभिन्नता मिलती है। यही कारण है कि उर्दू गजल में प्रयुक्त मिथक सामान्यतः इस्लाम की गली से होकर आए हैं तो हिन्दी गज़ल के ये मिथक अपने पौराणिक ग्रंथों से लिए गए हैं। उर्दू गजलों में 'रसूल', 'तूर' आदि को मिथक बनाया गया तो हिन्दी गज़लों में राम, कृष्ण, सीता, द्रौपदी आदि मिथकों का प्रयोग किया जाता है। इनके सहारे ही अनेक भावों और विचारों की अभिव्यक्ति की जाती है।

8 उर्दू गजल का मूल स्रोत भारत से बाहर है। अतः उसमें जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश है वह अलग दिखाई देता है। यह बात अलग रही कि अब उर्दू गज़लों में भी सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय परिवेश के दर्शन होने लगे हैं। किन्तु हिन्दी गजल का मूल स्रोत यहीं है। अतः उसका सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश भिन्न है। दोनों ही भाषाओं की गज़लों में यह अन्तर स्पष्ट दिखाई देता है। उर्दू गजल में यदि किसी सुन्दरी की सुन्दरता की उपमा दी जाती है तो चौदहवीं के चांद से किन्तु हिन्दी गजलों में यही उपमा पूर्णिमा के चांद से दी जाती है। कारण साफ है कि उर्दू गजल ने जिस परिवेश से यह उपमा उठाई उसमें चौदहवीं के चांद को सम्मान दिया जाता है जबकि भारतीय सनातनी परिवारों में पूर्णिमा के चन्द्रमा को ही अर्घ्य चढ़ाया जाता है।

9 यद्यपि उर्दू साहित्य में भी गजल के क्षेत्र में जदीद शायरी (नयी शायरी) का दौर शुरू हुआ किन्तु हिन्दी गजल का वास्तविक उठान ही बिल्कुल नया है। उसकी भाषा, उसकी उपमाएं, उसका कथ्य, उसकी संवेदना एवं शिल्प एकदम नया है। अतः नवीनता भी हिन्दी गजल की अपनी एक अलग और स्पष्ट विशेषता है।

कुछ लोगों को यह एतराज हो सकता है, और है भी कि गजल से पहले 'हिन्दी' लगाकर हिन्दी गजल और उर्दू गजल का प्रश्न क्यों पैदा किया जा रहा है। यहां यह बात बिल्कुल साफ है कि साहित्य के क्षेत्र में हमेशा ऐसा होता रहा है। यह किन्हीं साम्प्रदायिक या दीवार खड़ी करने के उद्देश्य से नहीं हुआ है वरन यह जो हुआ है वह किसी भी काव्यधारा के समुचित विकास और उसके स्वरूप को समझने की आसानी के कारण हुआ है। गजल ही क्यों, क्या गीत के साथ ये शब्द नहीं लगते? यदि यह उचित नहीं होता तो भाषा विशेष को विधा विशेष का विशेषण बनाकर बंगला गीत, मराठी गीत, गुजराती गीत,

पजाबी गीत आदि नाम क्या दिया जाता। इसका आशय यही है कि भाषागत विशेषण लगाने से किसी भाषा म पनपती हुई किसी साहित्य विधा की वास्तविक और गहरी पहचान को ढूढा जा सकता है तथा दूसरी भाषाओ म स्थापित किसी साहित्य विधा से तुलनात्मक रूप मे उसे जाना और परखा जा सकता है। यही कारण है कि गज़ल के साथ हिन्दी के रचनाकारो ने हिन्दी विशेषण लगाकर उसे हिन्दी गज़ल कहा।

हिन्दी गजल का इतिहास भले ही अमीर खुसरो म प्रारम्भ माना जाता है, कितु बीच म हिन्दी गजल की दृष्टि से उसका एक अधकार युग रहा है और बाद म यद्यपि आधुनिक हिन्दी कविता के प्रारम्भिक काल मे ही भारतेन्दु तथा उनके बाद बहुत स हिन्दी कवियो ने गजलें कही, कितु दुष्यन्त कुमार क 'साये मे धूप' की गजलें, जिनम से कुछ गजलें पहले सारिका क 'दुष्यन्त स्मति विशेषाक' मे प्रकाशित भी हुई थी, के बाद ही हिन्दी कविता के क्षेत्र म हिन्दी गजल का वास्तविक उत्थान हुआ। अर्थात यदि कुल मिलाकर देखा जाय तो पिछले बीस वर्षों मे ही हिन्दी गजल ने अपना वास्तविक रूप ग्रहण किया है। यद्यपि यह भी सच है कि इन गज़लो मे से अधिकतर मे लफ्फाजी ही है, कितु यह भी सत्य है कि हिन्दी गजल ने गज़ल साहित्य को एक नया तेवर एव ऐसी नयी नयी दिशाए दी हैं जो शायद उर्दू गज़ल मे पहल नही थी। इतने कम समय मे विश्व साहित्य की किसी भी एक विधा ने शायद ही इतनी तरक्की की होगी जितनी हिन्दी गज़ल ने की। उर्दू गज़ल की समृद्ध एव सुदीर्घ परम्परा क सम्मुख हिन्दी गजल का अभी बचपन ही है कितु उसने फिर भी वे चमत्कार कर दिखाए हैं जिनके कारण गज़ल के क्षेत्र मे हिन्दी गज़ल का विशेष योगदान माना जा सकता है। उसका उज्ज्वल भविष्य साफ दिखाई दे रहा है

—कुमार लेखक

☐ ग़ज़ल क्रम

जब वक्त मिले तू भी अंगार उठाना कर 68/ नाम उसका जान से भी यूं हमें प्यारा रहा 69/ बात कुछ भी नहीं है मगर कुछ तो है 70/ जुल्म की बैगी भी हो शमशीर टूटेगी जरूर 71/ भर गीतों से होठों पर कभी वो हरफ नहीं आये 72/ है प्यार तो फिर प्यार का आधार भी रहे 73/ हंसी के पास ही आंसू का रंग है यारा 74/ बात किस किस की करूं हर एक घर पर धूप थी 75/ मैं आज हूं मुझको न कोई गम की हवा दे 76/ जिन्दगी आंधी में जब आवाज देती है मुझे 77/ कोई गुमी है जो दिल में उदास बैठी है 78/ तमाम उम्र उसी की अदा के साथ रहा 79/ एक गम का बीज दिल में जो मुझे बोना पड़ा 80/

क्या हुआ जो लड़खड़ाते पांव, दम होंठों पे है 81/ जाते-जाते कभी चुपके से पलट, चुपके से 82/ तुमने तोड़े भले ही रिश्ते और नाते ये पत्थर 83/ दिल को किन्हीं हदों में बांधने की जिद न कर 84/ कि जब लहर सुनती है किसी साहिल की आवाजें 85/ कि कोई अश्क के धागों में बांधता है उसे 86/ ये माना बूंद हूं लेकिन समन्दर की तरह रह लूं 87/ आग के अंगार थे और धूप के उपमान थे 88/ रह-रह के गिर रहे हैं दिल पर कठोर पत्थर 89/ मैं एक जाम हूं पीकर के छोड़ जाओगे 90/ उम्र भर सूना रहा जो वो सुबह का भाल हूं 91/ जब भी डूबे हैं किसी रंग में गहरे भाग 92/ धूप निकली तो नजर आए नजारे किसके 93/ नदी के कूल पे ज्यों जलतरंग बजते हैं 94/ क्यूं आज अपने आपसे भी बेखबर हूं मैं 95/ सदियों से बज रही है जो पत्थर की बांसुरी 96/

गजलें

एक खशबू के महल मे वद हूँ
मैं किसी शतदल कमल मे वद हूँ

जिसमे केवल प्यार केवल प्यार है
आजकल ऐसी गजल मे बद हूँ

जिन्दगी बोली दू धोखा क्या तुझे
मैं तो खद ही एक छल मे वद हूँ

रुक के आना मेरे होठो पर हँसी
मै अभी आँसू के जल मे बद हूँ

जिसमे पहले प्यार की खशब मिली
मैं उमी मासूम पल मे वद हूँ

आप केवल आज पर मत जाइये
आज होकर भी मै कल मे बद हूँ

मैं न निकलूगा अभो वाहर 'कुँअर'
प्रश्न होकर भी मैं हल म वद हूँ

22 जन. 1989

2

छू के कान्हा के अधर जिन्दा रही
बाँसुरी राधा के घर जिन्दा रही

कोई सपना अपना देखेगी जरूर
ये नज़र मेरी अगर जिन्दा रही

पत्थरो ने उसको कुचला तो बहुत
फूल की खुशबू मगर जिन्दा रही

जब हँसी के घर गई तो मर गई
जिन्दगी आसू के घर जिन्दा रही

हम जिये भी तो जिये दो-चार पल
साँस यूँ तो उम्र भर जिन्दा रही

दिल की धड़कन तो कभी की मर चुकी
फिर भी जीने की खबर जिन्दा रही

2 मई, 198

3

फूल से, पत्तियो से चुनी धूप दू
आप कहिये तो मैं फागुनी धूप दू

इस वदन को मुनासिब नही ठडकें
आइये आपको गुनगुनी धूप दू

भोर का चित्र है आपकी हर छुअन
सोचता हूँ उसे जामुनी धूप दू

यह दिवस तो किसी नेह का दीप है
क्यों न उसको रुई-सी धुनी धूप दू

सर्दियाँ आएँ तो आपको ऐ 'कुँअर'
प्यार के स्वेटरो मे बुनी धूप दू

31 मई, 1989/22 जून, 1988

4

बोलता है मगर बेजुबाँ भी तो है
मेरे एहसास का यह बयाँ भी तो है

सुख मे हँसकर दुखो से न घबराइये
दीप की रोशनी मे धुआँ भी तो है

उससे यू ही निकलना सरल तो नही
जिन्दगी आजकल इम्तिहा भी तो है

सिफ लफ्जो को सुनकर न रुक जाइये
इनके अदर कोई दास्ता भी तो है

म अकेला नही हूँ मेरे साथ मे
दद और आह का कारवा भी तो है

आपका हो न हो मुझको एहसास है
दद जो है यहाँ वो वहा भी तो है

है अँधेरा जहा चाद-सूरज उगा
तेरे अन्दर 'कुअर' आसमाँ भी तो है

21 जून 1989

5

मन के आकाश पर यूँ ही छाते रहो
चाँदनी की तरह मुस्कुराते रहो

ये हवाएँ तो खुद ही महक जायेंगी
प्यार से प्यार के गीत गाते रहो

देखिये भूल जाएँ न अपना सबक
रोज यू ही हमे आजमाते रहो

मेरा चेहरा मेरा चेहरा रह सके
आईना कोई ऐसा दिखाते रहो

तुम जिसे चाहोगे आके बैठेगा वो
प्यार से मन की चादर बिछाते रहो

है अँधेरा बहुत दिल मे चारो तरफ
एक दिये की तरह झिलमिलाते रहो

फूल का जैसे खुशबू से सम्बन्ध है
प्यार देते रहो, प्यार पाते रहो

8 जुलाई, 1988

6

करो चर्चे न बेगानी गज़ल के
मुझे मालूम हैं मानी गजल के

बताएँ हम, तुम्हारे होठ क्या है
ये दो मिसरे हैं रूमानी गज़ल के

तुम्हारी साँस की खशबू को छूकर
खुले कुतल किसी धानी गजल के

छलकते हैं तुम्हारे लोचनो से
हजारा रग मस्तानी गजल के

छुअन के परिचयो मे मिल रहे हैं
पते हर बार अनजानी गज़ल के

मेरी गजलो मे ये जो शब्द है न
ये मोती हैं किसी दानी गज़ल के

तुम्हारी हर हँसी मे गूजते है
कई स्वर एक पहचानी गजल के

अगर पूछो तो उसके भक्त है हम
नही, हम है नही, ज्ञानी, गजल के

5 जून, 1989

7

धूप से छाँव की कहानी लिख
आह से आँसुओं की बानी लिख

यह करिश्मा भी कर मुहब्बत में
आग से कागजों पै पानी लिख

माँगने वाला कुछ तो देता है
तू सभी याचकों को दानी लिख

मौत का हाथ थामकर उससे
यह भी कह ज़िन्दगी के मानी लिख

दर्द जब तेरे दिल का राजा है
प्रीति को दिल की राजधानी लिख

है अँधेरा मशाल दे कोई
साँवला हूँ गुलाल दे कोई

रंग डाले तो कोई बात नहीं
रंग अपना न डाल दे कोई

मैं कोई दुख की बात हूँ मुझको
आज हँसकर न टाल दे कोई

मछलियाँ कह रही हैं उनको भी
एक प्यारा-सा जाल दे कोई

एक दर्पण हूँ, कब से गूँगा हूँ
मुझ पै पत्थर उछाल दे कोई

ज़िन्दगी, जिन्दगी नहीं लगती
मुझको उलझे सवाल दे कोई

वो तो पल-पल पै रुख बदलता है
कैसे दिल की मिसाल दे कोई

12 फरवरी, 1988

9

आईना हूँ शबाब से कह दो
मैं नशा हूँ शराब से कह दो

उसको फ़ुर्सत मिले तो ख़ुद आये
प्रश्न हूँ मैं जवाब से कह दो

हम न होते तो वो कहाँ होती
शब्द हैं हम किताब मे कह दो

मेरे अन्दर भी एक ख़ुशबू है
बात यह भी गुलाब से कह दो

उसकी आँखो मे हम ही रहते है
नींद आये तो ख़्वाब से कह दो

क़र्ज़ वो हूँ जो चुक नही सकता
जिन्दगी के हिसाब से कह दो

जब भी आऊँ वो ख़ुद ही उठ जाए
मैं हवा हूँ नक़ाब से कह दो

10

प्यार पूजा का थाल है लोगो
ज़िन्दगी का कमाल है लोगो

उस पे सोचो तो जान जाओगे
होंठ में भी गुलाल है लोगो

उसको तलवार क्यूँ बनाते हो
प्यार तो एक ढाल है लोगो

जिसको अन्तिम जवाब कहते हो
वो ही पहला सवाल है लोगो

ऐ 'कुँअर' अश्क मत कहो उसको
वो तो मन का उछाल है लोगो

2 मार्च, 1988

11

एक मंजिल हूँ, रास्ता भी हूँ
उसके घर का सही पता भी हूँ

वो जो शब्दों की एक मूरत है
उसको सुनता हूँ, देखता भी हूँ

लहर जो मुझको तट पै लाती है
उसमें कुछ देर डूबता भी हूँ

अलविदा होंठ से मैं कहता हूँ
और आँखों से रोकता भी हूँ

सोचता हूँ कि कुछ नहीं सोचूँ
फिर भी ये बात सोचता भी हूँ

2 मार्च, 1988

12

उसके होंठों की प्यास हूँ, खुश हूँ
चाहे खाली गिलास हूँ, खुश हूँ

दर्द सीने में उठके कहता है
यह न समझो उदास हूँ, खुश हूँ

मैं तो बस, आग था मगर जब से
आँसुओं का लिबास हूँ, खुश हूँ

खुद से मिल के उदास रहता था
जब से मैं उसके पास हूँ, खुश हूँ

नेह के दीप में है घर मेरा
चाहे जलती कपास हूँ, खुश हूँ

4 मार्च, 1988

13

मेरे इस दिल में क्या है क्या नहीं है
अभी तक मैंने ये सोचा नही है

कथा आँसू की चलती ही रहेगी
ये एक-दो रोज का किस्सा नही है

सभी रिश्तो मे यह मत सोचियेगा
कि वो ऐसा है, ये वैसा नही है

किसी के गम मे जो डूबा हुआ है
वो हँसता है मगर हँसता नही है

मैं यूं तो रोज तुझको देखता हूँ
तुझे लेकिन अभी देखा नही है

मोहब्बत हो कि जीवन का सफर हो
कहाँ अब ऐ 'कुँअर' धोखा नही है

फिर नया दर्द दे गया कोई
चैन इस दिल का ले गया कोई

शायरी की किताब था ये दिल
फाड़ उसके सफे गया कोई

मैंने खुशियों की राह पूछी थी
दे के गम के पते गया कोई

उसको मिलना था गैर से लेकिन
मिल के मुझसे गले गया कोई

दूर जाकर मुझे डुबाने को
साथ मेरे बहे गया कोई

5 फरवरी, 1987

अब ये चाहत है मेरी चाहों की
कोई धड़कन सुने निगाहों की

कोई मुझको न देवता कह दे
एक मूरत हूँ मैं गुनाहों की

मैं जो गिरता हूँ मुझको गिरने दो
अब जरूरत नहीं है बाँहों की

कब न जाने किधर को मुड़ जाएँ
ये ही फितरत है दिल की राहों की

कौन कीमत लगा सका ऐ दिल
तुझसे उठती हुई कराहों की

9 फरवरी, 1987

17

प्यार पत्थर है इसकी चाह न कर
दिल ही टूटेगा ये गुनाह न कर

अपने अन्दर न रख जलन कोई
चुपके-चुपके ये आत्मदाह न कर

कितने मतलब लगायेगी दुनिया
दिल भी टूटे अगर तो आह न कर

अपनी हालत तो देख निर्मोही
चाहे मेरी तरफ निगाह न कर

शायरी दिल की चीज है प्यारे
सिर्फ होंठो मे वाह-वाह न कर

पथ के काटे हटा-हटा के 'कुँअर'
इतनी आसान अपनी राह न कर

14 फरवरी, 1987

तेरे साथ गुज़ारे दिन
अपने सबसे प्यारे दिन

किरनों की चिट्ठी लाये
सुबह-सुबह हरकारे दिन

आ मैं तुझसे प्यार करूँ
मेरे राजदुलारे दिन

कोई फूल नहीं तुझ-सा
घूमे द्वारे-द्वारे दिन

गलियों-गलियों गायेंगे
गीत नये बजारे दिन

शाम हुई तो बिछुड़े हैं
देकर चाँद-सितारे दिन

चलकर साथ कभी अपने
बैठें नदी किनारे दिन

क्या कोई पल जी पाए
माना इत्ते सारे दिन

अब सब अच्छे लगते हैं
मीठे हों या खारे दिन

दिल के दीपक पर हमने
काजल जैसे पारे दिन

26 मई, 1988

19

अब हम खुद से बात करेंगे
अपनी तहकीकात[1] करेंगे

दिन की मिट्टी सूख गयी तो
रोते-रोते रात करेंगे

इनको तुम दिल तक मत लाना
फूल है ये, आघात करेंगे

आंखों तक आने दो आंसू
वर्ना ये उत्पात करेंगे

हँसने में तुम जीत भी जाओ
रोने में हम मात करेंगे

जाने कब सूखे खेतों पर
ये बादल बरसात करेंगे

ढलते सूरज की बातें तो
मुरझाये जलजात करेंगे

जहर को पीकर नाम जहर का
हम जैसे सुकरात करेंगे

25 जून, 1989

1 खोजबीन

वो प्यार क्या है जहाँ हो के तू ख़फ़ा न चले
चिराग बुझने लगेंगे अगर हवा न चले

है गम भी एक तपस्या मगर ये शर्त भी है
तू जिसके गम मे जला है उसे पता न चले

ये हो सका है न होगा कि मेरी आँखो मे
तू याद बन के रहे और रतजगा न चले

भला यकीन के क़ाबिल भी है ये बात कोई
कि तू जिधर हो उधर हो के रास्ता न चले

नदी, नदी न रहेगी वो और कुछ होगी
तटो के बीच 'कुँअर' जो ये फ़ासला न चले

13 फ़रवरी, 1987

23

मरी ही वात है मुझको सुना रहा है कोई
ये मैं नही हूँ कही मुझमे गा रहा है कोई

वो आसमान झुका है जमीन पर हँसकर
या मेरे सामने नजरें झुका रहा है कोई

मैं इक हवा का झकोरा हूँ और वो खुशबू
बडे ही प्यार मे मुझमे समा रहा है कोई

ये मेरे दिल के अँधेरा मे रोशनी कैसी
मैं खुशनसीब हूँ परदे उठा रहा है कोई

वो खुद तो आज भी सोया हुआ-सा लगता है
अजब ये वात है मुझको जगा रहा है कोई

हूँ वो नजर जो विना आँसुओ के धुल न सकी
यह वात कह के अभी तक रुला रहा है कोई

ये चाँद और सितारा की आहटें है 'कुअर'
या चुपके-चुपके मेरे पास आ रहा है कोई

27 फरवरी, 1987

24

सिर्फ़ आहट से उसे पहचानने की जिद करूँ
मैं उसे जाने बिना ही जानने की ज़िद करूँ

जिस से छनकर आग भी पानी का एक झरना बने
अपने सर प ऐसा बादल तानने की जिद करूँ

उसकी जिद ये हो कि वो मुझको गमों की आँच दे
और मैं उसकी ही जिद को मानने की ज़िद करूँ

उसका आँचल मेरे आँसू से सफा होता रहे
और मैं आँचल में आँसू छानने की ज़िद करूँ

स्वातिजल ही वो पियेगा ये पपीहे की है ज़िद
मैं भी कोई ऐसी ही जिद ठानने की ज़िद करूँ

23 मई, 1987

कसम है जो कि अपनी रुह प्यासी छोडकर आओ
हमारे पास जब आओ उदासी छोडकर आओ

बहुत दिन हो गये लौटे नही हो गाव तुम अपने
अगर है जिद कोई तो ऐ प्रवासी, छोडकर आओ

तुम्हे मालूम क्या कितना अँधेरा है मेरे दिल मे
न मेरे पास ऐसे पूर्णमासी छोडकर आओ

तुम्हे जो जिन्दगी को कोई प्यारा रग देना है
जहा जाओ वहाँ कोई अदा-सी छोडकर आओ

वो कविता का सुघर घर है कभी तो उसके आगन मे
तुम अपनी जिन्दगी को व्यजना-सी छोडकर आओ

5 नवम्बर, 1987

तू भले मस्जिद बना मंदिर बना
दिल को लेकिन उससे भी बेहतर बना

मैं अगर चिड़िया की इक तस्वीर हूँ
मेरे बाज़ू खोल, मेरे पर बना

पाँखुरी मे कैद रहकर भी कही
अपनी खुशबू फूल के बाहर बना

खेलने दे सबको अपने रग मे
प्यार को बस प्यार रख, मत डर बना

पाव की तस्वीर खीची है तो फिर
पास मे उसके कही ठोकर बना

तुझ पै जो फेके गये पत्थर 'कुँअर'
उनसे हम-जैसो का कोई घर बना

26 मई 1989

27

कही तो दिल को ठहराना पडेगा
तुझे वर्ना बिखर जाना पडेगा

न समझा है न समझेगा कभी वो
मुझे दिल को ही समझाना पडेगा

समन्दर से उसे मिलना है तो फिर
नदी को दूर तक जाना पडेगा

मैं,उसके घर भला जाऊँ तो कैसे
इसी रस्ते मे मयखाना पडेगा

किसी के अनमने आँसू की खातिर
मुझे ताउम्र मुस्काना पडेगा

न जाने खद से क्या-क्या बोलता हूँ
मेरा भी नाम दीवाना पडेगा

बीच में रोके न कोई भी किसी का रास्ता
क्या पता बस हो यही उसकी खुशी का रास्ता

दिल में तेरे जो धुआं उठता है उठने दे उसे
इस धुएँ में ही मिलेगा रोशनी का रास्ता

मुश्किलों में रह के उसका प्यार पाया तो लगा
मौन से होकर गया है जिन्दगी का रास्ता

साथ उसके दूर तक चलना पड़ा तो क्या हुआ
धूप ने ही तो दिखाया चाँदनी का रास्ता

मैं ये रस्ता हूँ 'कुँअर' ढूँढोगे तो मिल जायेगा
दुश्मनी की राह में भी दोस्ती का रास्ता

क्यू किनारे पर खड़ा है जा भँवर मे डूब जा
जो तुझे गहराइयाँ दे, उस नजर मे डूब जा

तू किसी राधा का दिल है, तू है मीरा का भजन
जा, कन्हैया की मधुर वशी के स्वर मे डूब जा

ऐ नजर, मुझको सभी ने मीन की उपमाएँ दी
जिन्दगी पानी है तो पानी के घर मे डूब जा

तू अगर परवाज है, तो सबके पखो मे उतर
मैं नही कहता कि तू मेरे ही पर मे डूब जा

लोग अब सुनते नही ऐ शब्द, तेरी दास्ता
सुन, तू मेरी बात सुन, अपने अधर मे डूब जा

नाव-से दीपक मे जब बैठी हुई थी रोशनी
क्या ये तूफा ने कहा, अधे सफर मे डूब जा

16 मार्च, 1989

उसको केवल डर मिला, जिसने किसी को डर दिया
प्यार पाया उसने, जिसने प्यार का मंजर दिया

मदिरा में बज उठी खुद ही हजारों घंटियाँ
एक भटकन को किसी ने जब भी उसका घर दिया

रंग निखरे और खुशबू का बदन भी खिल उठा
फूल के हाथों में जब तितली ने अपना पर दिया

ऐ सुबह की धूप तूने बर्फ को पिघला के फिर
यह बहुत अच्छा किया जो प्यार का निर्झर दिया

देखना यह है कि क्या होना है अब आगे 'कुंअर'
धूप की नजों को तुमने चाँदनी तो कर दिया

नींद को अब जागरण की ही दिशा में मोड़ दूँ
आ मेरे सपने तुझे दिन की लहर पर छोड़ दूँ

सौंप तो दी उसने मुझको ज़िन्दगी की ये किताब
पर ये बतलाया नहीं किस-किस सफे को मोड़ दूँ

बोलती रहती हैं जो कुछ उससे मेरी चुप्पियाँ
वो अगर सुन ले तो खुद से बोलना भी छोड़ दूँ

मुझको मिल जाए वो खुशबू जिसकी है मुझको तलाश
तो मैं कोमल पाँखुरी से पत्थरों को तोड़ दूँ

टूटे धागों ने पिरोये जिस तरह टूटे ये फूल
मैं भी यूँ टूटूँ कि फिर टूटे-हुओं को जोड़ दूँ

ना एक मीठी चुभन है भली लगे है मुझे
कि जिसमें प्यार का काँटा भली लगे है मुझे

न जाने कौन से क्या, उसने ये कहा मुझसे
शहर की आबो-हवा जगली लगे है मुझे

यूँ रह रहा है कोई मेरे दिल की धड़कन मे
कि अपना दिल भी उसी की गली लगे है मुझे

भर ही अपनी नजर चुभ रही हो काँटे सी
मगर क्यूँ उसकी नज़र मखमली लगे है मुझे

बसा है एक वो कजरारा रूप आँखो मे
कि चाँदनी भी 'कुसुम' साँवली लगे है मुझे

33

घुटन वाले घरों में भी जो ये ताजा हवा जाती
तो वो खामोश लेटी बासुरी कुछ गुनगुना जाती

वो अपनी चाल मे चलती रही अच्छा हुआ यह भी
नदी मेरी तरह चलती तो वो भी डगमगा जाती

यही कुछ सोचकर मैंने हवा मे नाम लिक्खा है
अगर मै रेत पर लिखना लहर आकर मिटा जाती

भला हो आँसुओ का जो वो घर से ही नही निकले
नही तो उनकी भी बारात देखर रतजगा जाती

बुझा दीपक किसी चौखट पै बैठा सोचता है यह
कि उसकी लौ कभी दो चार पल तो जगमगा जाती

इन आँखों पर कोई आँसू हथेली की तरह रख ले
सुलझना है तो उलझन को पहेली की तरह रख ले

ये माना आज मैं इक टूटा खंडहर हूँ मगर फिर भी
ऐ मेरे गाँव तू मुझको हवेली की तरह रख ले

किसी पीड़ा के घर जाकर कहा ये दिल की धड़कन ने
तू मेरी चाह है मुझको सहेली की तरह रख ले

ये सारा ही खुला आकाश अब तेरी हथेली है
उसी पर अपने सदा को चमेली की तरह रख ले

मुझे वरदान तो यह है नदी के पास से गुज़रूँ
मगर यह शर्त भी है एक लम्बी प्यास से गुज़रूँ

कहा मुझसे गया है ये कि मैं बनकर रहूँ कागज़
मगर ये हुक्म भी है आग के इतिहास से गुज़रूँ

कि जिसमें रह के मुझको उसकी सूरत ही नज़र आए
मैं कब से सोचता हूँ ये कि उस एहसास से गुज़रूँ

अजब ये शर्त है सब कुछ रहे यूँ सामने मेरे
मगर मैं हर घड़ी, हर पल किसी सन्यास से गुज़रूँ

सताती ही रही मुझको हमेशा एक ये उलझन
मैं अपने पास से गुज़रूँ कि उसके पास से गुज़रूँ

न पूछ मुझसे जमाने, कि क्या रहा हूँ मैं
तमाम उम्र हवा ही हवा रहा हूँ मैं

मैं उठ के गिर जो रहा हूँ तो बात ऐसी है
अब अपने आप को चलना सिखा रहा हूँ मैं

नदी का नीर तो बादल के पास है शायद
बचा है रेत जो उसमें नहा रहा हूँ मैं

हवा के बीच अभी हिचकियों के चर्चे है
जरूर उसको कहीं याद आ रहा हूँ मैं

ऐ दिल से निकली हुई आह तू ही बतला दे
ये बोझ कौन-सा दिल पर उठा रहा हूँ मैं

जरूर मैं ही सो रहा हूँ वर्ना क्यू अब तक
जो जागता है उसी को जगा रहा हूँ मैं

रदीफ बन के वहाँ मैं ही आ रहा हूँ अब
गजल जो झूम के इस वक्त गा रहा हूँ मैं

16 मार्च, 1989

यह मत समझो उस के घर दिन चार का आना-जाना है
यह तो तब से है जब से ससार का आना-जाना है

नफरत की ईंटो मे नन्हा प्यार कही दब जाता है
जब से दिल के आँगन मे दीवार का आना-जाना है

कुछ दिन से यह आलम है कुछ याद नही रहता मुझको
रहता हूँ इस पार मगर उस पार का आना-जाना है

सोचो तो चलती चीजे भी ठहरी-ठहरी लगती है
समझो तो ठहराव मे भी रफ्तार का आना-जाना है

अपनी तीखी बातो से मत तोड किसी का दिल प्यारे
यह वह काबा है जिसमे उस यार का आना-जाना है

पानी-पानी हो जाता है एक ही पल मे जो घुलकर
मेरे होठो पर ऐसे अगार का आना जाना है

वो ही दिल की धडकन को आवाज नयी दे जाता है
दिल की चौखट तक जिस भी फनकार का आना-जाना है

अपने दिल के दरवाजे हर वक्त 'कुअर' खोले रखना
यह वह घर है जिसमे तेरे प्यार का आना-जाना है

बदलकर उसके घर का रास्ता मैं जो गया होता
यही होता भटक कर मैं कहीं पर खो गया होता

खनकते ही रहे पावन मँजीरे ध्यान के वर्ना
न दिल में ये अगर बजते तो कब का सो गया होता

बहुत अच्छा हुआ जो मुझको आँसू मिल गए फिर से
नहीं तो कौन था जो गम के धब्बे धो गया होता

अगर हँसकर मुझे आवाज तुमने दी नहीं होती
तो यह सच है कि मैं हँसते हुए भी रो गया होता

नदी में और भी पानी की फसलें झूमती - गाती
'कुँअर' कुछ बीज आँसू के जो बादल बो गया होता

5 जून, 19

अगर हो सख्त तो खत भी है पत्थर
जो दिल तोड़े, मुहब्बत भी है पत्थर

अगर पूजो तो पत्थर भी है मूरत
अगर फेंको तो मूरत भी है पत्थर

मेरी आदत है शीशे-सा चटकना
जमाने तेरी फ़ितरत भी है पत्थर

मुझे फल की तरह तोड़ा गया है
मेरी शायद जरूरत भी है पत्थर

अमर दोनों का ही है एक जैसा
तुझी-सा खूबसूरत भी है पत्थर

जिधर बैठे उधर ही चोट खाई
ये आंगन और वो छत भी है पत्थर

1 मई, 1986

जब वक्त मिले तू भी अंगार उछाला कर
दुनिया में अँधेरा है, कुछ यूँ भी उजाला कर

हर बार ये लगता है, जैसे कि ये मैं ही
तू आँख से आँसू को मत ऐसे निकाला कर

तू प्यार का साँचा है, मैं मोम का पानी
जी जैसे करे तेरा, उस रूप में ढाला कर

जो मेरी हथेली पर इक बूँद है आँसू की
तू आँच कोई देकर उस बूँद को छाला कर

इस शहर में नफरत के, मैं खत हूँ मुहब्बत का
जब-जब भी गिरूँ, तू ही, हाँ तू ही सँभाला कर

1989

41

नाम उसका जान से भी यूं हमें प्यारा रहा
जैसे मीरा के भजन के साथ इकतारा रहा

उम्रभर छाया रहा जिस पर कि जल जाने का डर
मैं उसी कागज के घर में आ के दोबारा रहा

जिसको छूकर मेरे होठों की जलन कुछ कम हुई
ऐसा भी होठों पे मेरे एक अंगारा रहा

याद उसकी उम्रभर कुछ इस तरह चलती रही
जैसे आंखों में मेरी, आंसू का बंजारा रहा

कौन कहता था कि वो टूटेगा मेरी ही तरह
जो वचन होठों पे उसके वन के ध्रुवतारा रहा

सिंधु बनने से नदी रहना ही अच्छा है 'कुंअर'
है नदी मीठी, समन्दर जन्म से खारा रहा

22 मई, 1987

42

बात कुछ भी नही है मगर कुछ तो हे
मेरे गम की उसे भी खवर कुछ तो है

अश्क है, आह है,। दर्द है, टीस है
उस पै कुछ भी नही, मेरे घर कुछ तो ह

होठ से, आख से, उसने सव पी लिया
जहर मुझमे था जो, वेअसर कुछ तो है

मेरे दिल मे तो खामोशियाँ तक नही
फिर भी तुझ पै ऐ मेरे अधर, कुछ तो है

दोस्ती ना सही, दुश्मनी ही सही
बीच मे तेरे-मेरे 'कुँअर' कुछ तो है

1989

43

जुल्म की कैसी भी हो शमशीर टूटेगी जरूर
यह तेरे पाँवो की भी ज़ंजीर टूटेगी जरूर

तुझसे पहले ही कहा था दिल को शीशे मे न रख
जो भी शीशे मे जडी, तस्वीर टूटेगी जरूर

उसको खत लिखने से पहले ही मुझे मालूम था
कितनी भी कोशिश करूँ तहरीर टूटेगी जरूर

उसके तेवर देखकर मुझको भी लगता है कि अब
मेरे दिल के दुर्ग की प्राचीर टूटेगी जरूर

मेरे, माथे के पसीने मे अगर दम है तो फिर
तेरी जिद भी ऐ मेरी तकदीर, टूटेगी जरूर

1988

43

जुल्म की कैसी भी हो शमशीर टूटेगी जरूर
यह तेरे पाँवो की भी जजीर टूटेगी जरूर

तुझसे पहले ही कहा था दिल को शीशे मे न रख
जो भी शीशे मे जडी, तस्वीर टूटेगी जरूर

उसको खत लिखने से पहले ही मुझे मालूम था
कितनी भी कोशिश करूँ तहरीर टूटेगी जरूर

उसके तेवर देखकर मुझको भी लगता है कि अब
मेरे दिल के दुर्ग की प्राचीर टूटेगी जरूर

मेरे, माथे के पसीने मे अगर दम है तो फिर
तेरी जिद भी ऐ मेरी तकदीर, टूटेगी जरूर

1988

42

बात कुछ भी नही है मगर कुछ तो है
मेरे गम की उसे भी खबर कुछ तो है

अश्क है, आह है,। दर्द है, टीस है
उस पै कुछ भी नही, मेरे घर कुछ तो है

होठ से, आख से, उसने सब पी लिया
जहर मुझमे था जो, बेअसर कुछ तो है

मेरे दिल मे तो खामोशिया तक नही
फिर भी तुझ पै ऐ मेरे अधर, कुछ तो है

दोस्ती ना सही, दुश्मनी ही सही
बीच मे तेरे-मेरे 'कुअर' कुछ तो है

1989

43

जुल्म की कैसी भी हो शमशीर टूटेगी जरूर
यह तेरे पावों की भी ज़ंजीर टूटेगी ज़रूर

तुझसे पहले ही कहा था दिल को शीशे में न रख
जो भी शीशे में जड़ी, तस्वीर टूटेगी ज़रूर

उसको खत लिखने से पहले ही मुझे मालूम था
कितनी भी कोशिश करूँ तहरीर टूटेगी जरूर

उसके तेवर देखकर मुझको भी लगता है कि अब
मेरे दिल के दुर्ग की प्राचीर टूटेगी ज़रूर

मेरे, माथे के पसीने में अगर दम है तो फिर
तेरी जिद भी ऐ मेरी तकदीर, टूटेगी जरूर

1988

मेरे गीतो के होठो पर कभी वो स्वर नही आए
कि जिनके बीच तेरे नाम के अक्षर नही आए

मैं जब भी घर से निकलू तो तेरे घर के लिए निकलू
मगर हर लम्हे पै सोचू कि तेरा घर नही आए

हमे मालूम था हम ऐसे सपने है जो टूटेंगे
यही कुछ सोचकर हम नीद से बाहर नही आए

किसी से बढ के तुमने दोस्ती की ही नही होगी
नही तो हो नही सकता कोई खजर नही आए

न जाने बाज कैसा था वो जिसने खुदकुशी कर ली
किसी पछी के उसके हाथ मे जब पर नही आए

अगर वो मिल गया तो बाद मिलने के बचेगा क्या
नदी बढ-बढ के कहती है अभी सागर नही आए

16 मार्च, 1989

है प्यार तो फिर प्यार का आधार भी रहे
अब तुम भी रहो सामने ससार भी रहे

हम जब भी मिलें तब ही घरो की तरह मिलें
फिर चाहे कही बीच मे दीवार भी रहे

कुछ ऐसा करिश्मा भी करें दिल की राह मे
ठहरें जहा पै हम, वही रफ्तार भी रहे

है तुझ पै निजी डायरी, ये ठीक है, मगर
फनकार, तेरे हाथ मे अखबार भी रहे

जो चाहते हो आसमा छूना ऐ दोस्तो
तो आँसुओ के साथ मे अगार भी रहे

फूलो मे जैसे खुशबुएँ, हम तुममे ऐ 'कुअर'
आजाद भी रहे हैं, गिरफ्तार भी रहे

12 मार्च, 1989

हसी के पास ही आँसू का रग है यारो
यही तो जिन्दगी जीने का ढग है यारो

जरा सी प्यार की थपकी से बज उठेगा वो
ये प्यार धूप है, ये दिन मृदग है यारो

धरा से ले के गगन तक उडान है उसकी
हमारा प्यार भी उडती पतग है यारो

हटा के तीर वहा आज फूल भी रख लो
तुम्हारे पास जो दिल का निषग[1] है यारो

न जाने जाके कहाँ खत्म होगी अब ऐ 'कुँअर'
जो आजकल मेरी मुझसे ही जग है यारो

25 जून, 1989

1 तरकश

47

बात किस-किस की करूँ, हर एक घर पर धूप थी
जाने क्या मौसम था जो पूरे शहर पर धूप थी

दो घडी उससे मिला तो दूर तक चर्चे हुए
बात इतनी थी मगर पूरी खबर पर धूप थी

रोशनी जिसने भी की तपना पडा उसको जरूर
रात थी शीतल मगर दिन के अधर पर धूप थी

क्यो न जलते पाव मेरे क्यो न छाले फूटते
मैं उधर चलता रहा जिस-जिस डगर पर धूप थी

यूँ ही उस आचल को सबने झूमता बादल कहा
उसने ही सबको बचाया जिनके सर पर धूप थी

जिन्दगी की राह मे हमने यही देखा 'कुंअर'
छाँव थी बस उसके नीचे जिस शजर[1] पर धूप थी

8 अप्रैल, 1989

---

1. पेड़

48

मैं आज हूँ मुझको न कोई कल की हवा दे
ऐ जिन्दगी, तू मुझको इसी पल की हवा दे

ले देख पसीने मे है गर तेरा समन्दर
ऐ मेरी नदी, अब ता तरल जल की हवा दे

भर जाए न सासो के घुँघरुओ की ये खनक
तू उनको अपने प्यार की पायल की हवा दे

बाहर तू बहुत शान्त है ऐ आँख के पानी
अब कुछ तो मुझे भीतरी हलचल की हवा दे

जैसे कि हरे पेड मिटाते हैं थकानें
तू भी मुझे अपने हरे आचल की हवा दे

बस्ती मे रह के घुटने लगा है ये मेरा दम
आ तू ही मुझे दो घडी जगल की हवा दे

25 जून, 19[illegible]

जिन्दगी आँखो से जब आवाज देती है मुझे
जीने का कोई नया अन्दाज देती है मुझे

उसकी आँखो मे उमडते आसुओ की यह घटा
उसके मन की हलचलो का राज देती है मुझे

काट जाता है न जाने कौन मेरी उँगलियाँ
वेख दी जब-जब भी कोई साज़ देती है मुझे

हर नई ठोकर का भी एहसान है मुझ पर ऐ दोस्त
वो ही तो अन्जाम का आगाज देती है मुझे

नोच डाले हैं समय ने पख मेरे ऐ 'कुँअर'
फिर भी उसकी यह अदा परवाज देती है मुझे

27 अगस्त, 1988

50

कोई खुशी है जो दिल में उदास बैठी है
हँसी के घर में भी आँसू की प्यास बैठी है

वो साँवला-सा बदन और उस पे शोख हँसी
कि नीली झील के तट पर कपास बैठी है

तेरे ही रूप में वो प्यार की नई खुशबू
पहन के फूल का झीना लिबास बैठी है

लो मुझको गौर से देखो कि बाँसुरी हूँ मैं
मेरी वो धुन भी मेरे आसपास बैठी है

ज़रूर होगी 'कुँअर' तेरी ही वो शोख गजल
जो लफ्ज़-लफ्ज़ में लेकर मिठास बैठी है

14 दिसम्बर, 1988

53

ए पाँव, दम होठो पै है
ा उसकी कसम होठो पै है

अपना गम, अपनी खुशी
ा है और कम होठो पै है

कर वो भँवर बन जाए फिर
नाजुक-सा खम होठो पै है

अब क्यू न माँगूँ हर खुशी
गो मेरा सनम होठो पै है

ाज पर लिखा होठो मे जब
न की कलम होठो पै है

समझा तो कितनी देर से
मकी आँख नम होठो पै है

बैठा कि उसके बाद से
का ही सितम होठो प है

गूजती थी जो 'कुअर'
ला कदम होठो पै है

14 मार्च, 1989

52

एक गम का बीज दिल मे जो बोना पडा मुझे
अब पेड बन गया तो सँजोना पडा मुझे

आँखो को जब भी उसकी हथेली नही मिली
पलको को अपनी ओढ के सोना पडा मुझे

जब रो पडा मैं तब कही जाकर के वो हँसा
पानी को भी पानी से ही धोना पडा मुझे

गजलें मेरी हुई हैं तो यू ही नही हुईं
पूछो उन्ही से किस तरह रोना पडा मुझे

पाया है उसको कैसे बताऊ मैं ऐ 'कुँअर'
कितनी ही बार खुद को भी खोना पडा मुझे

1988

53

क्या हुआ जो लडखडाए पाँव, दम होठो पै है
मैं जिऊँगा, जब तलक उसकी कसम होठो पै है

मैं तुझे कैसे दिखाऊँ अपना गम, अपनी खुशी
जो मेरे दिल मे बहुत है और कम होठो पै है

क्या पता कब लहर बनकर वो भँवर बन जाए फिर
ये जो तेरी जुल्फ का नाजुक-सा खम होठो पै है

खुशनुमा मौसम से मैं अब क्यू न माँगू हर खुशी
कितने दिन के बाद वो मेरा सनम होठो पै है

नाम उसका मैंने कागज़ पर लिखा होठो से जब
अक्षरो ने ये कहा दिल की कलम होठो पै है

मैं भी उसके दर्द को समझा तो कितनी देर से
जब कि सदियो मे ही उसकी आँख नम होठा पै है

एक दिन सच बोल क्या बैठा कि उसके बाद से
जिसको भी देखो उसी का ही सितम होठो प है

बन के धडकन दिल मे मेरे गूजती थी जो 'कुअर'
अब उसी आवाज़ का पहला कदम होठो पै है

14 मार्च, 1989

जाते-जाते कभी चुपके से पलट चुपके से
जो तू है लहर, तो जा, छू के आ तट चुपके से

थक गया हूँ मैं कडी धूप मे चलते-चलते
मुझ पे बिखरा दे ये भीगी हुई लट चुपके से

कुछ अचानक मिली खुशिया मे नशा रहता है
ऐ हवा चांद के घूघट को उलट चुपके से

जब तलक रहती है वो बस के कसक देती है
दिल की उँगली मे उखडती है जो चट चुपके से

हो न हो उसके ही आने की ये आहट होगी
दिल के दरवाज़े पे होती है जो खट चुपके से

फैलना है तुझे खुशबू-सा अगर दुनिया मे
एक ही फूल की पँखुरी मे सिमट चुपके से

चाह-पनिहारी की उँगली को थामकर ऐ 'कुँअर'
रोज पनघट प चला आता है घट चुपके से

4 मार्च, 1988

तुझे तोडें भले ही रिश्ते और नातो के पत्थर
सँभाले रखियो, ऐ दिल अपनी सौगातो के पत्थर

तेरे होंठो को छूकर आए है पूजेंगे इनको
भले ही चोट दे जाए तेरी बातो के पत्थर

चलो इन पर चढाएँ फूल अब अपनी हँसी के
कि आसू ने तराशे है मुलाकातो के पत्थर

किसी को क्या दिया उससे मिला क्या, सोचकर ये
गिरा मत फूल से दिल पर वहीखातो के पत्थर

कोई शीशे की गुडिया तोडनी होगी इन्हे भी
बडे सज-धज के निकले हैं ये बारातो के पत्थर

भले बारूद बरसाओ, न चटकेंगे जरा भी
बहुत ही सख्त है अपनी मुलाकातो के पत्थर

दिल उसका आईना है यू न रह-रहकर गिराओ
'कुअर' आखो से अपनी तुम ये बरसातो के पत्थर

27 जून, 1989

दिल को किन्ही हदो मे बाँधने की ज़िद न कर
पानी को रस्सियो मे बाधने की जिद न कर

कविता की बात छोड, जिन्दगी के गीत मे
मुखडे को अतरा मे बाधने की जिद न कर

तेरे उसूल तेरी उडाने न काट
ये कैंचियाँ परो मे बाँधने की ज़िद न कर

पर्वत, तेरी नदी तो समन्दर की प्यास है
तू उसका पत्थरो मे बाँधने की जिद न कर

अब आसुओ के गीत समझता ही कौन है
अब इनको धडकनो मे बांधने की जिद न कर

लफ्जो की खुशबुओ को समझने के दिन गए
लफ्जो को अब खतो मे बाधने की जिद न कर

7 मार्च 1988

कि जैसे लहर सुनती है किसी साहिल की आवाज़ें
बड़े ही प्यार से सुनते हो तुम भी दिल की आवाज़ें

कि जैसे शान्त सागर के हृदय में ज्वार रहता है
तेरी भी चुप्पियों में है तेरी महफिल की आवाज़ें

हुआ जब क़त्ल मेरा तो मेरी जो चीख निकली थी
उसी में थी कहीं शामिल मेरे क़ातिल की आवाज़ें

कोई विश्वास जिस दिन से मिला है एक धड़कन का
बहुत आसान लगती है किसी मुश्किल की आवाज़ें

कि जिस दिन से मिला है मुझको उसका प्यार उस दिन से
सुनाई दे रही है ऐ 'कुँअर' मंज़िल की आवाज़ें

21 मई, 1988

कि कोई अश्क के धागो मे बाधता है उसे
ये बात आज भी शायद नही पता है उसे

भले ही मेरी नजर से वो दूर - दूर रहे
मगर ये दिल तो हर इक वक्त देखता है उसे

वो मेरे पास यू आने की सोचता है बहुत
ये मेरे घर का रास्ता ही रोकता है उसे

धडकते दिल की ये धडकन ही अब है घर उसका
ये मेरे प्यार की खुशबू हो रास्ता है उसे

नयन से गिरने को होता है गर कोई आसू
वो अपने फूल से ,हाथो मे थामता है उसे

ये माना बूँद हूँ लेकिन समन्दर की तरह रह लूँ
अगर तू साथ है तो राह मे घर की तरह रह लूँ

तेरी यादो के उजले हंस आते हैं इधर जब से
तभी से सोचता हूँ मैं सरोवर की तरह रह लूँ

भले हो बाज के पंजो मे आ जाए कभी लेकिन
मेरा दिल सोचता ये है कबूतर की तरह रह लूँ

तू कोई गीत शायद है इसी से सोचता हूँ मैं
तेरे होठो की सरगम मे किसी स्वर की तरह रह लूँ

हमे वनवास मिलना है, मगर वनवास से पहले
तेरी आँखो मे ऐ सोने, स्वयवर की तरह रह लूँ

21 मई, 1988

60

आग थे, अंगार थे और धूप के उपमान थे
हम अगर पानी नहीं होते तो रेगिस्तान थे

बात क्या है जो तेरी आंखों के आंसू हो गए
जिन्दगी, हम तो तेरे होंठों की ही मुस्कान थे

सारी दुनिया को न जाने क्यों बहुत मुश्किल लगे
प्यार के ये लफ्ज तो मेरी तरह आसान थे

यह हमारे बीच अब दुनिया कहां से आ गई
तुझको तो मालूम है हम सिर्फ तेरा ध्यान थे

अब गिरे हैं उसकी आंखों से तो ये जाना कि हम
उसकी आंखों में 'कुंअर' कुछ देर के मेहमान थे

2 मार्च, 1989

रह-रह के गिर रहे हैं दिल पर कठोर पत्थर
आवाज़ एक नदी है हर एक शोर पत्थर

ओ रे घुमड़ते बादल ये तुझको क्या हुआ है
तुझसे भी पायेंगे क्या ये मन के मोर पत्थर

इस वक्त नीर हूँ मैं एक साँवली नदी का
डर है कि हो न जाए उसकी हिलोर पत्थर

जिस रोज़ से खुली है उस चाँद की हकीकत
उस दिन से हो गए हैं सारे चकोर पत्थर

ना द्वार था न खिड़की ना सेंध ही लगी थी
जाने किधर से आए इस दिल में चोर पत्थर

मीठे फलों की डाली खुद को बचाए रखना
शहरों से चल पड़े हैं गाँवों की ओर पत्थर

11 मार्च, 1989

मै एक जाम हूँ पीकर के छोड जाओगे
क्या तुम भी सबकी तरह मुझको तोड जाओगे

तमाम उम्र ही भीगी रहेगी ये आखें
जो अपनी याद का आचल निचोड जाओगे

मैं अपनी शाख से टूटा हुआ - सा लगता हूँ
मुझे क्या और भी टूटन से जोड जाओगे

मिलन की नाव जो नाची थिरक के तो क्या तुम
मचलती लहर की बाहे मरोड जाओगे

तुम्हारे साथ चला हूँ, तुम्ही ये बतला दो
ये मेरा रास्ता किस ओर मोड जाओगे

1989

63

उम्र भर सूना रहा जो वो सुबह का भाल हूँ
फिर अधूरी रह गई ऐसी कोई जयमाल हूँ

हो सके तो तुम निशानी की तरह रख लो मुझे
मैं किसी के हाथ से छूटा हुआ रूमाल हूँ

प्यार के मीठे भजन के साथ सुन लेना कभी
दिल के मन्दिर में वही बजती हुई करताल हूँ

दिल अगर काँपा न होता तो धड़कता भी नहीं
जिससे दिल ज़िन्दा रहा ऐसा कोई भूचाल हूँ

कत्ल का इल्ज़ाम उस पर क्यूँ लगाऊँ ऐ 'कुँअर'
इन दिनों क्या मैं किसी कातिल से कम बेहाल हूँ

30 मार्च, 1986

जब भी डूबे हैं किसी रंग मे गहरे, धागे
एक आंचल की तरह झूम के लहरे धागे

दिल की उँगली पै लिपटते है कभी खुलते हैं
तेरी यादो के किरन जैसे सुनहरे धागे

साथ जब मिल के रहे, तोड न पाया कोई
माना नाज़ुक थे ये कोमल-मे छरहरे धागे

आसमानो मे पतगो - सा उडा देते हैं
हमको साँसा के दुहेरे ये इकहरे धागे

सर पै आंचल तो कभी बन के दुल्हन का घूघट
चाद - से चेहरे पै देने रहे पहरे धागे

16 नवम्बर, 1989

धूप निकली तो नजर आए नजारे कितने
दिल के कागज़ पै बने चित्र तुम्हारे कितने

तुम क्या नजरो से हुए दूर कि इन आँखो मे
अश्क बन - बन के चमकते है सितारे कितने

आह, आसू, ये कसक, टीस, जलन और धुआ
इक मोहब्बत की नदी के है किनारे कितने

बन के सूरज तो कभी चाद, कभी ध्रुव तारा
कोई करता है मुझे रोज इशारे कितने

काम आया वो नशेमन मे कभी भवरो म
एक तिनके ने दिए मुझको सहारे कितने

मै ही जूडे की तरह बाध न पाया उनको
जिन्दगी यू तो तेरे केश सँवारे कितने

मन, हवा, गीत, सपन, मेघ, समन्दर, फागुन
उसने रक्खे है 'कुंअर' नाम हमारे कितने

7 नवम्बर, 1989

नदी के कूल पै ज्यो जलतरग वजते हैं
हमे न छेडो कि यौवन मे अग वजते हैं

ये पोर-पोर मे अगडाइयो की हलचल है
या नम फूला की प्याली मे रग वजते हैं

नयन को कान वनाकर कभी भी सुन लेना
कि उनमे रूप के कितने मृदग वजते है

ऐ दिन, तू प्यार के वोना पै ऐसे सगत दे
कि जैसे ढाल, मजीरो के सग वजते हैं

हम ऐसे साज है जो दिल की राजधानी मे
जहा भी वजते हैं लेकर उमग वजते हैं

नयन मे वोलते चितवन के तीर भी होगे
नही तो क्या कही खाली निपग वजते है

सुना है इन दिनो फूलो मे, पत्तियो मे भी
हमारे प्यार के मीठे प्रसग वजते है

3 जून, 1989

क्यूँ आज अपने आप से भी बेखबर हूँ मैं
क्या पहले पहले प्यार की पहली नज़र हूँ मैं

अब जिस जगह पे प्यार की सरगम लिए हुए
सोई हुई है बाँसुरी ऐसा अधर हूँ मैं

कुछ देर रह के साथ सभी छोड़ते गए
अपनी तरह का एक अकेला सफर हूँ मैं

पूछा जो मैंने शहर से तुम क्या हो, तो कहा—
मुझसे डरो कि आज भी जंगल का डर हूँ मैं

साँसों ने फूँक - फूँक के रक्खे जहाँ कदम
छोटी - सी ज़िन्दगी का वो लम्बा सफर हूँ मैं

जो चलते - चलते थक गए, उनके लिए 'कुँअर'
मरुथल में एक पेड़ हूँ, जंगल में घर हूँ मैं

21 नवम्बर, 1989

सदियो से बज रही है जो निर्झर की बाँसुरी
उसको ही कह रहा हूँ मैं गिरिधर की बासुरी

आते ही मेरे होठो पै बजती है अपने-आप
फूला के जिस्म वाली वो पत्थर की बासुरी

काँपी है जन्म से ही मेरे दिल की उँगलिया
बजती है जन्म से ही किसी डर की बासुरी

जब तक जिऊ मैं प्यार की सरगम बनी रहे
फिर चाहे टूट जाए मेरे स्वर की बाँसुरी

चाहा मै तेरे होठ के मन्दिर की गूज हूँ
मुझको बना न पाँव की ठोकर की बाँसुरी

उडते हुए परिन्दे ने बादल से ये कहा
देखो कि मुझपै भी है मेरे पर की बासुरी

रूठे हुए ऐ गीत आ तू, लौट के तो आ
तुझको बुलाती है तेरे ही घर की बासुरी

जब तक है साँस, शान से जिन्दा रहेगी ये
क्यो कह रहे हो प्यास को पलभर की बाँसुरी

कुछ सोचकर ही, ऐ 'कुअर' ये कह रहा हूँ मैं
जो है नदी, वो है किसी सागर की बासुरी